इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

BECC-101

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

प्रारंभिक व्यष्टि-अर्थशास्त्र

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. इंद्राणी राय चौधरी
सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. एस. के. सिंह
अवकाश प्राप्त आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. जी. प्रधान
अवकाश प्राप्त आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

श्री आई.सी. धींगरा
अवकाश प्राप्त सहआचार्य
शहीद भगत सिंह कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

डॉ. एस. पी. शर्मा
सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
श्याम लाल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. बी. एस. बागला
अवकाश प्राप्त सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
पीजीडीएवी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्रीमती नीति अरोड़ा
सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र)
माता सुंदरी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री सोगतो सेन
सह-आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. नारायण प्रसाद
आचार्य (अर्थशास्त्र)
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजक : प्रो. नारायण प्रसाद

पाठ्यक्रम निर्माण दल

खंड/ इकाई सं.	विषय प्रवेश	इकाई लेखक एवं हिंदी अनुवादक
खंड 1	**परिचय**	
इकाई 1	अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था का परिचय	श्री आई.सी. धींगरा, अवकाश प्राप्त सहआचार्य, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – श्री. बी.एस. बागला, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 2	माँग एवं आपूर्ति विश्लेषण	
इकाई 3	माँग और आपूर्ति : व्यावहारिक अनुप्रयोग	
खंड 2	**साधन बाज़ार**	
इकाई 4	उपभोक्ता व्यवहार गणनावाचक दृष्टिकोण	डॉ. विजेता बनवारी, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र) महाराजा सूरजमल संस्थान, नई दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – श्री सुरेंद्र कुमार शर्मा, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र), श्यामलाल कॉलेज, दिल्ली
इकाई 5	उपभोक्ता व्यवहार : क्रमवाचक दृष्टिकोण	
खंड 3	**उत्पादन एवं लागतें**	
इकाई 6	एक परिवर्ती आगत का उत्पादन फलन	डॉ. वी.के.पुरी, सह-आचार्य (अर्थशास्त्र), श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – श्री मनदीप कुमार, प्रवक्ता– अर्थशास्त्र, राजकीय प्रतिभा विद्यालय, वसंत कुंज, नई दिल्ली
इकाई 7	दो एवं दो से अधिक आगतों का उत्पादन फलन	
इकाई 8	लागत फलन	
खंड 4	**बाज़ार संरचना**	
इकाई 9	पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म एवं उद्योग के संतुलन	डॉ. एस.पी. शर्मा, सह-आचार्य–अर्थशास्त्र, श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान अवकाश प्राप्त सहआचार्य–अर्थशास्त्र, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद
इकाई 10	एकाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	श्रीमती श्रुति जैन, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र) माता सुंदरी कॉलेज, नई दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान
इकाई 11	एकाधिकारिक प्रतियोगिता : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	
इकाई 12	अल्पाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	
खंड 5	**साधन बाज़ार**	
इकाई 13	साधन बाज़ार : साधन कीमत निर्धारण	डॉ. नौसीन निज़ामी, सहायक आचार्य (अर्थशास्त्र पं. दीन दयाल उपाध्याय, पेट्रोलिम विश्वविद्यालय, अहमदाबाद **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान
इकाई 14	श्रम बाज़ार	
इकाई 15	भूमि बाज़ार	
खंड 6	**आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका**	
इकाई 16	आर्थिक क्षेम : पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता	डॉ. एस.पी. शर्मा, सह-आचार्य (अर्थशास्त्र) श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान
इकाई 17	बाज़ार तंत्र की दक्षता : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका	डॉ. ममता महर, पोस्ट डॉक्टरल फेलो, वेल्यूचेंन एवं न्यूट्रीशन कार्यक्रम, वर्ल्ड फिश, मलेशिया **हिंदी अनुवाद** – डॉ. श्याम सुंदर सिंह चौहान

पाठ्यक्रम संपादक : प्रो. नारायण प्रसाद एवं श्री बी. एस. बागला

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

सामग्री निर्माण	कार्यालयी सहायक
श्री मनजीत सिंह अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन), इग्नू, नई दिल्ली	सुश्री कामिनी डोगरा आशुलिपिक, एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

जनवरी, 2019

© *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019*

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाइप सेट– ग्राफिक प्रिंटर्स, मयूर विहार फेस 1, दिल्ली – 110091

मुद्रण –

विषय वस्तु

खंड/इकाई	विषय प्रवेश	पृष्ठ संख्या
खंड 1	**परिचय**	**4**
इकाई 1	अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था का परिचय	7
इकाई 2	माँग एवं आपूर्ति विश्लेषण	26
इकाई 3	माँग और आपूर्ति : व्यावहारिक अनुप्रयोग	51
खंड 2	**उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत**	
इकाई 4	उपभोक्ता व्यवहार : गणनावाचक दृष्टिकोण	73
इकाई 5	उपभोक्ता व्यवहार : क्रमवाचक दृष्टिकोण	92
खंड 3	**उत्पादन एवं लागतें**	
इकाई 6	एक परिवर्ती आगत का उत्पादन फलन	129
इकाई 7	दो एवं दो से अधिक आगतों का उत्पादन फलन	142
इकाई 8	लागत फलन	172
खंड 4	**बाज़ार संरचना**	
इकाई 9	पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म एवं उद्योग के संतुलन	203
इकाई 10	एकाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	223
इकाई 11	एकाधिकारिक प्रतियोगिता : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	246
इकाई 12	अल्पाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णय	264
खंड 5	**साधन बाज़ार**	
इकाई 13	साधन बाज़ार : साधन कीमत निर्धारण	291
इकाई 14	श्रम बाज़ार	306
इकाई 15	भूमि बाज़ार	319
खंड 6	**आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका**	
इकाई 16	आर्थिक क्षेम : पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता	333
इकाई 17	बाज़ार तंत्र की दक्षता : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका	347
शब्दावली		358
कुछ उपयोगी पुस्तकें		369

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

प्रारंभिक व्यष्टि अर्थशास्त्र : परिचय

यह पाठ्यक्रम कला स्नातक (अर्थशास्त्र ऑनर्स) कार्यक्रम करने वाले छात्रों को व्यष्टि अर्थशास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों से परिचय कराता है। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों के बीच व्यष्टि अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों की अवधारणात्मक आधारशिला रखना है ताकि वे माध्यामिक व्यष्टि अर्थशास्त्र-I एवं माध्यमिक व्यष्टि अर्थशास्त्र-II को भली-भाँति समझ सकें तथा इन सिद्धांतों का वास्तविक जीवन की घटनाओं के विश्लेषण में अनुप्रयोग कर सकें।

अर्थशास्त्र एक प्रयोगात्मक एवं व्यावहारिक विषय है। इस विषय का सैद्धांतिक ज्ञान विभिन्न आर्थिक अभिकर्ताओं को इस प्रकार के निर्णय लेने में मदद करता है : किन वस्तुओं का उत्पादन करना है? वस्तुओं का उत्पादन किस प्रकार करना है? उत्पादन में किन तकनीकों का प्रयोग करना है? उत्पादन प्रक्रिया में किन कारकों अथवा संशोधनों का तथा किन संयोगों में प्रयोग करना है? उपभोक्ता वस्तुओं के क्रय संबंधी निर्णय किस प्रकार लेते हैं तथा उनके चयन संबंधी निर्णय कीमतों एवं आय में हुए परिवर्तनों से किस प्रकार प्रभावित होते हैं? फर्म कैसे तय करती है कि कितने श्रमिकों को काम पर लगाया जाय और श्रमिक कैसे यह तय करते हैं कि कहाँ उन्हें कार्य करना है और कब तक करना है? दूसरे शब्दों में, अर्थशास्त्र का विषय क्षेत्र राज्य की क्रियाओं के वित्तीयन से बढ़कर आम व्यक्ति के दैनिक जीवन में महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद करने तक पहुँच गया है।

आज अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र में बहुत-सी गतिविधियाँ सम्मिलित हो गयी हैं। इन गतिविधियों में शामिल हैं– (क) उपभोक्ता का व्यवहार या चयन प्रक्रिया; (ख) उत्पादक का व्यवहार अथवा उत्पादन क्रिया का आयोजन एवं संचालन किस प्रकार किया जाता है? (ग) बाज़ार के विविध रूप क्या होते हैं? (घ) विभिन्न व्यक्ति उत्पादन प्रक्रिया में अपने स्वामित्व वाले साधनों द्वारा किस प्रकार अपना योगदान देते हैं? (ङ) विभिन्न प्रकार की कार्य-दक्षताएँ कौन-सी हैं, (च) किन परिस्थितियों में बाज़ार विफल होते हैं और इन परिस्थितियों में बाज़ार अपनी किस भूमिका का निर्वहन कर सकता है?

प्रस्तुत पाठ्यक्रम छात्रों को उक्त सभी मुद्दों से अवगत कराता है। यह पाठ्यक्रम **छह खंडों** में विभक्त है :

अर्थशास्त्र की प्रकृति से परिचय कराते हुए **खंड 1** माँग एवं आपूर्ति के आधारभूत सिद्धांतों से अवगत कराता है। साथ ही, इस बात की भी जानकारी प्रदान कराता है कि माँग एवं आपूर्ति के वक्र किस प्रकार बाज़ार प्रक्रिया का वर्णन करने में प्रयुक्त होते हैं। इस खंड में तीन इकाई हैं। अर्थशास्त्र एवं अर्थव्यवस्था का परिचय नामक **प्रथम इकाई में**, अर्थशास्त्र की मूलभूत प्रकृति तथा इस विषय में प्रयुक्त आधारभूत संकल्पनाओं एवं विधि को समाहित किया गया है। **इकाई 2 में,** माँग एवं आपूर्ति के सिद्धांत, माँग एवं आपूर्ति की लोच की अवधारणा उसके निर्धारक तथा उसके मापन को बताया गया है। **इकाई** 3 माँग तथा आपूर्ति को साथ लेकर बाज़ार प्रक्रिया की चर्चा करती है।

खंड 2 उपभोक्ता के सिद्धांत से संबंधित है और इसमें दो इकाइयाँ हैं। **इकाई 4** उपयोगिता मापन के गणनात्मक दृष्टिकोण से संबंध रखती है और इस बात का विश्लेषण करती है कि उपभोक्ता किस प्रकार सम-सीमांत उपयोगिता की मदद से संतुलन को प्राप्त करता है? **इकाई 5** में क्रमवाचक दृष्टिकोण के तहत उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण किया गया है।

खंड 3 में, उत्पादन फलन एवं लागत सिद्धांत का विश्लेषण किया गया है। इसमें तीन इकाइयाँ हैं। **इकाई 6** एक परिवर्ती आगत वाले उत्पादन फलन पर प्रकाश डालती है। **इकाई 7 में** दो एवं इससे अधिक परिवर्ती आगतों वाले उत्पादन फलन की चर्चा की गई है।

इकाई 9 में विभिन्न प्रकार की लागतों को ध्यान में रखते हुए उत्पादन के लागत पक्ष की चर्चा की गई है।

खंड 4 बाज़ार के विभिन्न रूपों जैसे पूर्ण प्रतियोगिता, एकाधिकार, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता तथा अल्पाधिकार पर प्रकाश डालता है। इस खंड में चार इकाइयाँ हैं। पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म एवं उद्योग में संतुलन नामक **नौवीं इकाई** पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए इस बाज़ार के तहत फर्म एवं उद्योग के संतुलन की व्याख्या करती है। **इकाई 10** जिसका शीर्षक एकाधिकार : कीमत एवं उत्पादन निर्णयन है, के अंतर्गत एकाधिकार बाज़ार के कीमत विभेद की चर्चा की गई है। अल्पकाल एवं दीर्घकाल में एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता के तहत संतुलन की शर्तें, अतिरेक क्षमता का सिद्धांत तथा विभिन्न बाज़ार रूपों की तलना **इकाई 11** में की गई है। अल्पाधिकार के अंतर्गत कीमत एवं उत्पादन का निर्धारण **इकाई 12** में प्रदान किया गया है।

खंड 5 उत्पादन साधनों की कीमत निर्धारण पर प्रकाश डालता है। इसमें तीन इकाइयाँ हैं। वितरण के सीमांत उत्पादकता सिद्धांत की चर्चा करते हुए **इकाई 13** लगान एवं मज़दूरी किस प्रकार निर्धारित होते हैं पर एक विहंगम दृष्टिकोण प्रदान करती है। इसमें ब्याज एवं लाभ के सिद्धांतों की भी संक्षेप में चर्चा की गई है। **इकाई 14** पूर्ण प्रतियोगी एवं अपूर्ण प्रतियोगी श्रम बाज़ार के तहत मज़दूरी निर्धारण में माँग एवं आपूर्ति प्रक्रियाओं से आपका परिचय कराती है। साथ ही श्रम संघों की भूमिका एवं मज़दूरी विभिन्नताओं का विश्लेषण भी इस इकाई में शामिल किया गया है। **इकाई 15** उत्पत्ति के साधन के रूप में भूमि की विशिष्टताएँ एवं लगान के विभिन्न सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है।

खंड 6 में आर्थिक क्षेम बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका को शामिल किया गया है। इस खंड में 2 इकाइयाँ हैं– **इकाई 16** छात्रों को पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार के तहत कार्यक्षमताओं के विविध रूपों से परिचय कराती है और साथ ही यह भी स्पष्ट करती है कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की मान्यताओं से दूरी किस प्रकार के परिणाम देती है। **इकाई 17** उन विभिन्न परिस्थितियों की ओर इंगित करती है जहाँ बाज़ार विफल हो जाते हैं और इसी कारण राज्य को अपनी भूमिका का निर्वहन करना होता है।

खंड 6 आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका

खंड 6 आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता एवं राज्य की भूमिका

खंड 4 में आपको यह बताया गया था कि विभिन्न बाज़ार दशाओं में फर्म किस प्रकार व्यवहार करती हैं। **खंड 5** में यह स्पष्ट किया गया कि विभिन्न बाज़ार दशाओं के अंतर्गत उत्पत्ति के साधनों की कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है। इस **खंड** में हम यह बताने का प्रयास करेंगे कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार किस प्रकार के दक्ष परिणामों के विविध रूपों के लिए उपयुक्त होता है। अग्रेतर, यह भी बताया गया है कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की मान्यताओं से दूर जाने पर पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार विफल हो जाता है और इसलिए के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है। इस खंड में दो इकाइयाँ है।

इकाई 16 आपको पूर्ण प्रतियोगी बाजार के तहत दक्षताओं के विविध रूपों से परिचय कराती है और साथ ही यह भी स्पष्ट करती है कि पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार की मान्यताओं से दूरी किस प्रकार के परिणाम देती है। **इकाई 17** उन विभिन्न परिस्थितियों का बोध कराती है जहाँ बाज़ार विफल हो जाते हैं और तद्नुरूप राज्य के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 16 आर्थिक क्षेम : पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता

संरचना

16.0 उद्देश्य

16.1 विषय प्रवेश

16.2 दक्षता – परिभाषा एवं अवधारणाएँ
- 16.2.1 उत्पादक दक्षता
- 16.2.2 तकनीकी दक्षता
- 16.2.3 फर्मों के बीच संसाधनों का दक्षतापूर्ण आवंटन
- 16.2.4 उत्पाद मिश्रण में दक्षता

16.3 पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में फर्म की दक्षता

16.4 पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में दक्षता की और आगे व्याख्या

16.5 प्रतियोगी कीमतें एवं दक्षता : क्षेम अर्थशास्त्र का प्रथम मूल प्रमेय सिद्धांत

16.6 प्रतियोगी मान्यताओं से अलग हटना
- 16.6.1 अपूर्ण प्रतियोगिता
- 16.6.2 बाह्यताएँ
- 16.6.3 सार्वजनिक वस्तुएँ
- 16.6.4 अपूर्ण सूचनाएँ

16.7 सार-संक्षेप

16.8 संदर्भ ग्रंथादि

16.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

16.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोपरांत, आप सक्षम होंगे :

- आर्थिक दक्षता (पेरेटो दक्षता) की अवधारणा को सुस्पष्ट तरीके से व्यक्त कर पाने में;
- पेरेटो दक्षता प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की दक्षताओं को चिन्हित करके उनके बीच पारस्परिक संबंध स्थापित कर पाने में;
- पेरेटो दक्ष एवं अदक्ष स्थितियों के बीच भेद कर पाने में;
- उत्पादन संभावना सीमाएं तथा रूपांतरण की सीमांत दर बता पाने में;
- यह व्याख्या कर पाने में कि एक पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार 'उत्पादक' एवं आवंटनात्मक दक्षताएँ प्रदर्शित करता है;
- एक सरलीकृत पूर्ण प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में आर्थिक दक्षता की दशाओं को बता पाने में;

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

- पूर्ण प्रतियोगिता एवं संसाधनों का दक्ष आवंटन के बीच संबंधों का सार समझा पाने में, इसे ही क्षेम अर्थशास्त्र के पहला बुनियादी सिद्धांत के रूप में जाना जाता है;
- उन दशाओं को इंगित करना जिनके कारण पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार भी संसाधनों का आवंटन दक्ष तरीके से कर पाने में असफल रहता है;
- यह समझा पाने में कि यह ज़रूरी नहीं है कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में दक्षता उपलब्धि सामाजिक दृष्टि से भी वांछनीय हो; तथा
- पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार के अंतर्गत दक्षता उपलब्धियों के नीतिगत निहितार्थों की संक्षेप में व्याख्या कर पाने में।

16.1 विषय प्रवेश

समाज की बुनियादी समस्या, जिसने 'अर्थशास्त्र' को चालक की सीट पर बैठने का अवसर प्रदान किया, संसाधनों की दुर्लभता है। दुर्लभता, दक्षता के मूल में है। वही इन संसाधनों के अनुकूलतम उत्पादन, उपभोग एवं वितरण की अपेक्षा करती है। सामान्य रूप से एक अर्थव्यवस्था दक्ष है यदि वह विद्यमान प्रौद्योगिकीय एवं संसाधनों के साथ उपभोक्ताओं द्वारा माँगी गई वस्तुओं और सेवाओं को उपलब्ध कराती है। अर्थशास्त्र के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परिणामों में से एक यह है कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में संसाधनों का आवंटन दक्ष हो। यह महत्त्वपूर्ण परिणाम इस मान्यता को लेकर चलता है कि ऐसे पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में प्रदूषण या अपूर्ण सूचनाएँ जैसी बाह्यताएँ नहीं पायी जातीं। इकाई 9 में, ऐसे बाज़ार के बुनियादी अभिलक्षणों और उत्पाद की दी हुई कीमत पर फर्में उत्पादन के अनुकूलतम स्तर का निर्धारण किस प्रकार करती हैं, आदि प्रश्नों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि पूर्ण प्रतियोगिता एक ऐसी आदर्श बाज़ार संरचना है जो संसाधनों के दक्ष आवंटन को प्राप्त करती है।

इस इकाई में उस पूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार संरचना को विस्तार से समझाया गया है जो पूर्ण बाजार में उद्योगों में आर्थिक एवं आवंटनात्मक दक्षता तथा लाभ को अधिकतम करना सुनिश्चित करती है। तथापि, संसाधनों के दक्ष आवंटन एवं इनके प्रतिस्पर्धी कीमत निर्धारण के बीच निकट का साहचर्य आगतों एवं उत्पादन के निर्णयन एवं चयन में आर्थिक दक्षता की परिभाषा पर आधारित है, जैसा कि विल्फ्रेडो पैरेटो द्वारा 19वीं शताब्दी में प्रतिपादित किया गया था। इसी इकाई में उन परिस्थितियों को भी समझाया गया है जहाँ पूर्ण प्रतियोगी संरचना का परिचालन संभव नहीं हो पाता तथा संसाधनों के दक्ष आवंटन को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

16.2 दक्षता – परिभाषा एवं अवधारणाएं

हम पैरेटो द्वारा दी गई आर्थिक दक्षता की परिभाषा के साथ प्रारंभ करते हैं।

पैरेटो दक्ष आवंटन : संसाधनों का कोई भी आवंटन पैरेटो दक्ष है यदि यह किसी एक व्यक्ति को खराब स्थिति में लाए बिना किसी दूसरे व्यक्ति को बेहतर स्थिति में ला पाना संभव नहीं हो (संसाधनों के फिर से पुनरावंटन के द्वारा)।

तथापि यह भी महत्त्वपूर्ण है कि संसाधनों के आवंटन की दक्षता को प्राप्त करने के लिए उत्पादन में दक्षता को प्राप्त करना भी आवश्यक है जो संसाधनों के तकनीकी दक्ष आवंटन से ही संभव है जिसे तकनीकी दक्षता फर्मों के बीच संसाधनों के दक्ष आवंटन से ही प्राप्त किया जा सकता है। समग्र रूप से पैरेटो अनुकूलतम सुनिश्चित करने के लिए, उत्पादन में दक्षता को व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के साथ संबद्ध किए जाने की आवश्यकता होती है। इन अवधारणाओं को आगे के उपभागों में विस्तार से समझाया गया है।

16.2.1 उत्पादक दक्षता

कोई अर्थव्यवस्था उत्पादन में दक्ष है यदि वह अपने उत्पादन संभावना वक्र (production possibility frontier) पर स्थित है (चित्र 16.1)। पैरेटो की शब्दावली में, *उत्पादन में संसाधनों का आवंटन दक्ष है (अथवा 'तकनीकी दक्ष' है) यदि फिर से कोई पुनरावंटन किसी उत्पाद की अधिक मात्रा, किसी अन्य वस्तु के उत्पादन की मात्रा में कमी लाए बिना, उत्पादित नहीं होने देता।* इसे एक अन्य ढंग से भी समझा जा सकता है। कोई भी आवंटन अदक्ष है यदि किसी अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी लाए बिना किसी वस्तु का अतिरिक्त उत्पादन करना संभव है।

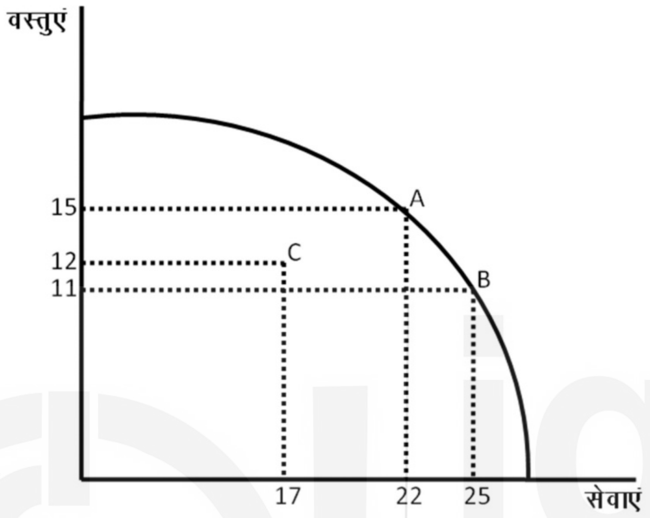

चित्र 16.1 : एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन संभावना सीमा

माना कि संसाधनों का आवंटन इस प्रकार किया गया है कि उत्पादन दक्ष नहीं है। अर्थात् उत्पादन संभावना वक्र के भीतर किसी बिंदु पर उत्पादन हो रहा है (चित्र 16.1 में C बिंदु पर)। इस स्थिति में किसी एक वस्तु के उत्पादन में कमी लाए बिना दूसरी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। बढ़ा हुआ यह उत्पादन किसी व्यक्ति को दिया जा सकता है जो कि बेहतर स्थिति में चला जाएगा (इससे किसी की स्थिति खराब भी नहीं होगी)। उत्पादन संभावना वक्र पर स्थिति बिंदु A तथा B उत्पादकता की दृष्टि से दक्ष हैं। इन बिंदुओं पर किसी एक वस्तु के उत्पादन में कमी लाए बिना दूसरी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती। बिंदु C अदक्ष स्थिति को इंगित करता है क्योंकि इस बिंदु पर बिना किसी अवसर लागत के वस्तुओं या सेवाओं की अधिक मात्रा उत्पादित की जा सकती है। *इस प्रकार, उत्पादन में अदक्षता भी पैरेटो अदक्षता है*। उत्पादन संभावना वक्र पर चलन इस सीमा पर संसाधनों के तकनीकी दक्ष आवंटन के रूप में परिलक्षित होता है।

उत्पादक दक्षता फर्मों के औसत लागत वक्र के सबसे निचले बिंदु पर भी प्राप्त होती है। इस प्रकार, उत्पादक दक्षता न्यूनतम लागत पर अधिकतम उत्पादन करने के लिए आगतों के अनुकूलतम संयोग के साथ वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन से संबंधित है। इसी तथ्य को इस इकाई के भाग 16.3 में विस्तार से समझाया गया है।

16.2.2 तकनीकी दक्षता

दी हुई आगतों के एक समुच्चय को प्रयुक्त करके प्रभावी तरीके से उत्पादन करने को तकनीकी दक्षता कहा जाता है। किसी फर्म को तकनीकी रूप से दक्ष कहा जाता है

यदि वह श्रम पूँजी एवं प्रौद्योगिकी जैसे आगतों की न्यूनतम मात्रा से अधिकतम उत्पादन करती है। इस प्रकार, **तकनीकी दक्षता** समग्र दक्षता की पूर्ण शर्त है।[1]

16.2.3 फर्मों के बीच संसाधनों का दक्षतापूर्ण आवंटन

तकनीकी दक्षता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि संसाधनों को विभिन्न फर्मों के बीच सही ढंग से आवंटित किया जाय। संसाधनों को उन्हीं फर्मों को आवंटित किया जाना चाहिए जो उनका दक्षतापूर्ण तरीके से प्रयुक्त करने में सक्षम हैं। दक्ष आवंटन की शर्त यह है कि किसी वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त किसी संसाधन का सीमांत भौतिक उत्पाद उसी वस्तु का उत्पादन करने वाली सभी फर्मों के लिए एकसमान होना चाहिए।

यद्यपि, किसी एक वस्तु का उत्पादन करने वाली फर्मों के सीमांत भौतिक उत्पाद की समानता संसाधनों के दक्ष आवंटन को सुनिश्चित करती है, तथापि यह शर्त उस समय पर्याप्त नहीं है जब फर्में इन्हीं संसाधनों को प्रयुक्त करते हुए अलग-अलग प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन कर रही हों। उस अवस्था में तकनीकी दक्षता की अतिरिक्त शर्त यह है कि प्रत्येक वस्तु का उत्पादन करने में आगतों के बीच तकनीकी प्रतिस्थापन की दरें (rates of technical substitution) एकसमान हो (यदि उत्पादन कार्य उत्पादन संभावना वक्र पर हो रहा है तो)। इसको बेहतर ढंग से चित्र 16.2 से समझा जा सकता है।

चित्र में दो वस्तुओं के उत्पादन में K तथा L की स्थिर मात्राओं को आवंटित करते हुए तकनीकी दक्षता को दर्शाया गया है। O_x तथा O_y को मिलाने वाली रेखा दक्ष बिंदुओं का बिंदु पथ है। इस रेखा पर वस्तु X के उत्पादन से वस्तु Y के उत्पादन की तकनीकी प्रतिस्थापन की दर (L एवं K के बीच) एकसमान है।

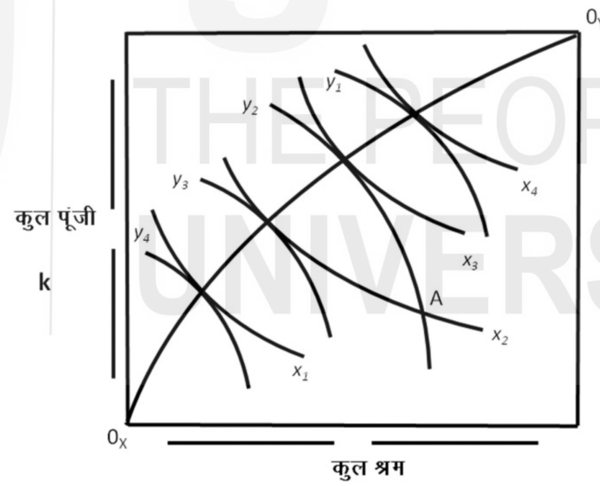

चित्र 16.2 : उत्पादन में दक्षता

चित्र 16.2 में बॉक्स की लंबाई कुल श्रम घंटों को तथा ऊँचाई कुल पूँजी घंटों को प्रदर्शित करती है। बॉक्स के बायीं ओर का निचला कोना वस्तु X के उत्पादन में लगाए गए श्रम तथा पूँजी की इकाइयों के मापन हेतु मूल बिंदु है। बॉक्स के दायीं ओर का ऊपर वाला कोना वस्तु Y के उत्पादन में लगाए गए श्रम तथा पूँजी की इकाइयों के मापन हेतु मूल बिंदु है। इन स्थितियों को प्रयुक्त करते हुए वस्तु X एवं Y के उत्पादन हेतु बॉक्स के भीतर प्रत्येक बिंदु पर संसाधनों का आवंटन दक्ष है। अर्थात् प्रत्येक साधन रोज़गार में है। अब हम वस्तु X के लिए (O_x को मूल बिंदु) तथा वस्तु Y के लिए (O_y

[1] तथापि, तकनीकी दक्षता, पैरेटो दक्षता की गारंटी नहीं देती। उदाहरणार्थ, एक अर्थव्यवस्था गलत वस्तुओं– उपलब्ध सभी संसाधनों को केवल बाएं पैर के जूते का उत्पादन करने में लगा करने में दक्ष हो सकता है, लेकिन कुछ पैरेटो सुधार प्रत्येक को बेहतर स्थिति में ला सकने में सफल हो सकते हैं।

को मूल बिंदु) समोत्पाद चित्र प्रस्तुत करते हैं। इस चित्र में स्पष्ट है कि मनमाने तरीके से चयनित आवंटन A अदक्ष है। श्रम एवं पूँजी के पुनरावंटन द्वारा X_2 की तुलना में X की अधिक मात्रा तथा Y_2 की तुलना में Y की अधिक मात्र उत्पादित की जा सकती है।

चित्र 16.2 में बिंदु P_1, P_2, P_3 एवं P_4 ही दक्ष आवंटन की स्थितियाँ हैं। जहाँ समोत्पाद वक्र एक-दूसरे को स्पर्श करते हैं। इस बॉक्स के भीतर इन बिंदुओं से इतर किन्हीं अन्य बिंदुओं पर समोत्पाद वक्र एक-दूसरे को काटने लगेंगे जो दक्षताहीनता को दर्शाता है। दो समोत्पाद वक्रों के स्पर्श बिंदु पर यह स्थिति नहीं पायी जाती। जैसे ही P_1 बिंदु से P_4 की ओर आगे बढ़ते हैं, X की अधिकाधिक मात्रा उत्पादित की जाने लगती है। लेकिन Y की कम मात्रा की लागत पर। इस प्रकार, P_2 की तुलना में P_3 अधिक दक्ष नहीं है बल्कि एकसमान दक्ष है। वस्तु X एवं Y के समोत्पाद वक्रों का आपस में स्पर्श करना यह इंगित करता है कि उनके ढाल आपस में बराबर हैं। अर्थात् वस्तु X एवं Y के उत्पादन में श्रम के लिए पूँजी की तकनीकी प्रतिस्थापन की दर एकसमान है। O_x एवं O_y को मिलाने वाले वक्र पर समोत्पाद वक्रों को आपस में स्पर्श करने वाले बिंदु श्रम के लिए पूँजी की तकनीकी प्रतिस्थापन की दरों की समानता को दर्शाते हैं। इसलिए वे संसाधनों के दक्ष आवंटन की स्थितियाँ हैं। इस वक्र बाहर के सभी बिंदु अदक्ष आवंटन की स्थितियाँ हैं वहाँ दो वस्तुओं के उत्पादन में बीच आगतों के पुनरावंटन द्वारा उत्पादन में स्पष्ट वृद्धि प्राप्त की जा सकती है। O_xO_y पर प्रत्येक आवंटन दक्ष है। तथापि X की अधिक मात्रा उसी दशा में उत्पादित की जा सकती है, जब Y के उत्पादन में कमी की जाय अथवा Y की अधिक मात्रा उसी दशा में उत्पादित की जा सकती है जब X के उत्पादन में कमी लायी जाय।

16.2.4 उत्पाद मिश्रण में दक्षता

तकनीकी दक्षता उस समय तक समग्र पैरेटो अनुकूलता सुनिश्चित नहीं कर सकती जब तक कि व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को उत्पादन संभावनाओं से संबद्ध नहीं कर दिया जाता। पैरेटो अनुकूलतम उत्पादन मिश्रण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक शर्त यह है कि संसाधनों के तकनीकी दक्ष आवंटन से उत्पादित मात्राएं वे हैं जिनकी उपभोक्ताओं द्वारा सर्वाधिक माँग की जाती है। तकनीकी रूप से, यह शर्त उसी दशा में पूरी होती है जब उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग की जाने वाली किन्हीं दो वस्तुओं के बीच प्रतिस्थापन की सीमांत दर (marginal rate of substitution - MRS) उत्पादन रूपांतरण की दर (rate of product transformation - RPT) के बराबर हो। उत्पाद मिश्रण (Product mix) की आवश्यक दशाओं को चित्र 16.3 में एक व्यक्ति अर्थव्यवस्था के लिए दर्शाया गया है। इसे एक जैसी प्राथमिकताओं से युक्त अनेक व्यक्तियों वाली अर्थव्यवस्था में भी लागू किया जा सकता है।

यह विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि अर्थव्यवस्था में केवल एक ही व्यक्ति है जो X तथा Y दो वस्तुओं का उत्पादन कर रहा है। X एवं Y के उत्पादन संयोगों को उत्पादन संभावना सीमा वक्र PP पर दर्शाया गया है। PP पर प्रत्येक बिंदु तकनीकी दक्षता का बिंदु है। इस चित्र में किसी उपभोक्ता के व्यक्तिगत समभाव चित्र को रखने पर ज्ञात होता है कि PP वक्र पर केवल एक बिंदु ही अधिकतम उपयोगिता की स्थिति को दर्शा रहा है। अधिकतम उपयोगिता का यह बिंदु E है। जहाँ PP वक्र किसी व्यक्ति के उच्चतम समभाव वक्र (U_2) पर स्पर्श कर रहा है। *इस बिंदु पर व्यक्ति की सीमांत प्रतिस्थापन दर (Y के लिए X की) उत्पादन की तकनीकी रूपांतरण दर (Technical RPT) (Y के लिए X की) के बराबर है। यह समग्र दक्षता के लिए वांछित शर्त है।*

एकल व्यक्ति अर्थव्यवस्था में PP वक्र X एवं Y के उन संयोगों को व्यक्त करता है जो उत्पादित किए जा सकते हैं। PP पर प्रत्येक बिंदु उत्पादन की दृष्टि से दक्ष है। तथापि केवल E बिंदु पर ही किसी व्यक्ति के लिए उपयोगिता वास्तव में अधिकतम है। E बिंदु पर व्यक्ति की MRS उस दर के बराबर है जिस दर पर X को Y से बदला जा सकता है।

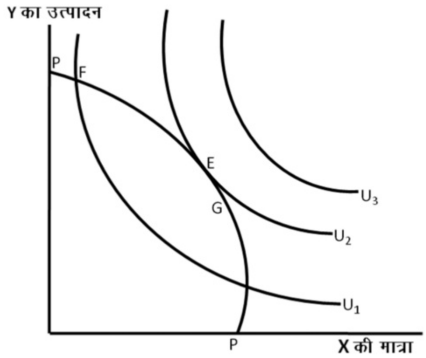

चित्र 16.3 : अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण के लिए दक्षता शर्त का ग्राफिक चित्रण

बोध प्रश्न 1

1) आर्थिक दृष्टि से दक्ष आवंटन क्या होता है। आर्थिक दृष्टि से दक्ष आवंटन किस प्रकार अदक्ष आवंटन से भिन्न है?

....

....

....

2) उत्पादन संभावना सीमा क्या है? रूपांतरण की सीमांत दर क्या है? रूपांतरण की सीमांत दर किस प्रकार उत्पादन संभावना सीमा से संबद्ध है?

....

....

....

3) 'तकनीकी दक्षता' से आपका क्या अभिप्राय है?

....

....

....

16.3 पूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार में फर्म की दक्षता

जैसा कि पूर्व भाग में बताया जा चुका है, दक्षता के दो स्वरूप हैं उत्पादन में दक्षता एवं आवंटन में दक्षता। उत्पादक दक्षता से आशय 'चीज़ों को सही तरीके से उत्पादित करना है' जबकि आवंटनात्मक दक्षता से आशय 'सही रूप से चीज़ों को विभाजित करने' से है।

कोई फर्म उत्पादक दृष्टि से दक्ष है जब संसाधनों (कारक आगतों) का कुल उपयोग उत्पादन की प्रति इकाई न्यूनतम लागत के रूप में परिलक्षित होता है। यह वह बिंदु है जहाँ फर्म की औसत कुल लागत न्यूनतम हो जाती है। इससे इतर स्तर पर औसत लागत अनुकूलतम नहीं होती। व्यक्तिगत फर्मों के मामले में, आवंटनात्मक परिभाषा यह है कि व्यक्तिगत फर्म सही वस्तुओं का सही मात्रा में उत्पादन कर रही है– ''सही कार्य कर रही है''। सही मात्रा में उत्पादन करने से तात्पर्य यह है कि *उत्पादित वस्तु की अंतिम इकाई की लागत (सीमांत लागत) ठीक उतनी ही है जितनी कि उपभोक्ता उसके लिए भुगतान करने के लिए तैयार है (इस इकाई की कीमत)।* इसी का अर्थ यह है कि

संसाधनों का आवंटन अनुकूलतम है। संसाधनों का आवंटन अनुकूलतम उस अवस्था में माना जाता है जब उनकी कोई बर्बादी न हों, अर्थात् सीमांत इकाई की उत्पादन लागत तथा कीमत आपस में बराबर हों। यह उसी दशा में संभव है जब P (=AR) = MC हो। जब बाज़ार की सभी फर्में इस कसौटी को पूरा करती हैं तो बाज़ार की माँग और आपूर्ति आपस में बराबर हो जाती हैं।

पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत परिचालित फर्म दीर्घकाल में उत्पादक एवं आवंटनात्मक दोनों ही रूपों में दक्ष होती है। इकाई 9 में, यह सिद्ध किया जा चुका है कि दीर्घकाल में फर्म असामान्य लाभ अर्जित नहीं कर सकती, क्योंकि पूर्ण प्रतियोगिता में नई फर्मों के प्रवेश, जो कि पूरी तरह से खुला होता है, से वस्तु की आपूर्ति बढ़ जाती है। जिससे बाज़ार कीमत के नीचे गिर जाने से असामान्य लाभ यदि कोई था, समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार, फर्म दीर्घकाल तक हानि उठाते हुए भी परिचालन जारी नहीं रख सकती।

उत्पादन, आवंटन दक्षता तथा दीर्घकालीन संतुलन (पूर्ण प्रतियोगी फर्म के लिए)

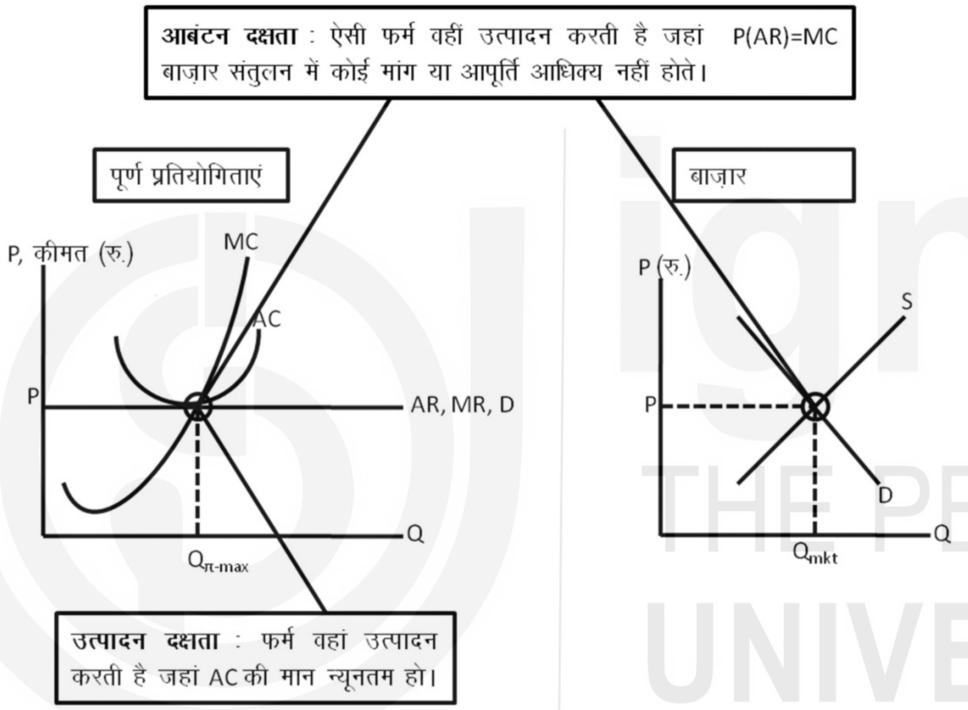

चित्र 16.4 : पूर्ण प्रतियोगिता वाली फर्म के लिए दीर्घकालीन संतुलन उत्पाद उस बिंदु पर है जहाँ $P = AC_{min} = MC = AR = MR$

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत परिचालित फर्म दीर्घकाल में उस बिंदु पर उत्पादन करती है, जहाँ $P = AC_{min} = MC = AR = MR$ यह स्थिति उत्पादक एवं आवंटनात्मक दोनों ही प्रकार की दक्षताओं की कसौटियों को पूरा करती है। अर्थात्

- *उत्पादक दक्षता* : पूर्ण प्रतियोगिता फर्म का दीर्घकालीन संतुलन दर्शाता है कि $AR = AC_{min}$ फर्म उत्पादक दृष्टि से दक्ष है।
- *आवंटनात्मक दक्षता* : क्षैतिजिक मांग वक्र (AR) ऊपर उठते हुए सीमांत लागत वक्र के उस बिंदु पर उत्पादन निर्धारित कर देता है जहाँ सीमांत आगम (MR) सीमांत लागत (MC) के बराबर हो। दीर्घकालीन संतुलन में P (AR) = MC के बराबर होता है। फर्म आवंटनात्मक दक्षता की स्थिति में है।

16.4 पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में दक्षता की और आगे व्याख्या

एक सरलीकृत पूर्ण प्रतियोगी अर्थव्यवस्था पर विचार कीजिए जहाँ सभी व्यक्ति एक जैसे हैं तथा खाद्यान्न उत्पादन में लगे हैं। मानकर चलते हैं कि (क) घटते प्रतिफल के नियम के अनुसार स्थिर आकार के भूमि के टुकड़े पर श्रम की प्रत्येक अतिरिक्त मिनट से खाद्यान्न की उत्तरोत्तर कम मात्रा ही प्राप्त होगी; (ख) खाद्यान्न की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई से उपभोक्ता को घटती हुई सीमांत उपयोगिता (MU) प्राप्त होगी। चित्र 16.5 में एक सरलीकृत अर्थव्यवस्था में माँग एवं आपूर्ति को दर्शाया गया है।

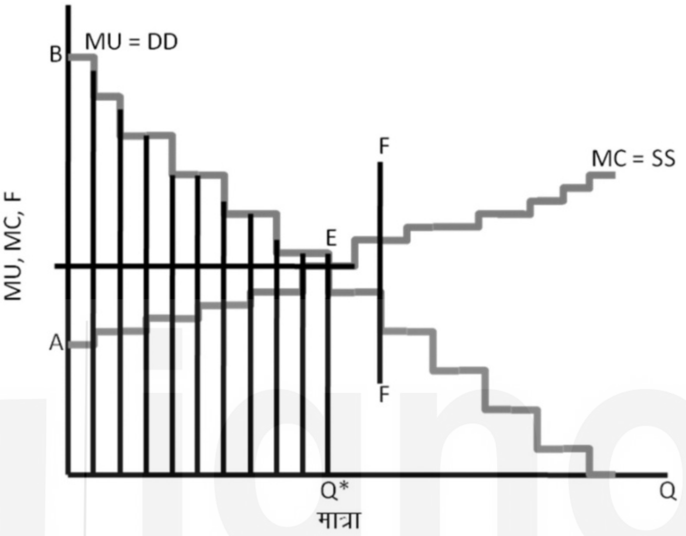

चित्र 16.5 : पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में दक्षता

जब हम व्यक्तिगत आपूर्ति वक्रों का क्षैतिजिक योग करते हैं तो हमें ऊपर की ओर उठता हुआ MC वक्र प्राप्त होता है। पहली इकाई में, हमने देखा था कि दीर्घकाल में MC वक्र ही उद्योग का पूर्ति वक्र होता है। इसलिए चित्र 16.5 में MC = SS। इसी प्रकार एक जैसे सीमांत उपयोगिता वक्रों का क्षैतिजिक योग (खाद्यान्न के लिए मांग) नीचे की ओर गिरता हुआ MU = DD वक्र प्रदान करता है। SS एवं DD वक्र जिस बिंदु (E) पर एक-दूसरे को काटते हैं वही खाद्यान्न के लिए प्रतियोगी संतुलन को दर्शाता है। बिंदु E पर कृषक ठीक उतना ही खाद्यान्न की आपूर्ति करते हैं जितनी को उपभोक्ता संतुलन बाज़ार कीमत पर क्रय करना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति निर्णायक बिंदु तक कार्य करता होगा जहाँ खाद्यान्न उपभोग का नीचे गिरता हुआ सीमांत उपयोगिता वक्र उत्पादित किए जाने वाले खाद्यान्न के ऊपर उठते सीमांत लागत वक्र को काटता है।

आर्थिक अधिशेष एवं दक्षता

चित्र 16.5 में **आर्थिक अधिशेष** की एक नवीन अवधारणा को दर्शाया गया है। जो संतुलन में आपूर्ति एवं मांग वक्र के नीचे के क्षेत्रफल के बराबर है। आर्थिक अधिशेष उपभोक्ता की बचत (माँग वक्र एवं कीमत रेखा के बीच का क्षेत्र) तथा उत्पादक की बचत (कीमत रेखा एवं आपूर्ति वक्र SS) के बीच के क्षेत्र के योग के बराबर है। उत्पादक की बचत में फर्मों तथा उद्योग में लगे विशिष्टीकृत आगतों के स्वामियों को प्राप्त लगान एवं लाभ भी शामिल है तथा यह उत्पादन की लागत के ऊपर आगम की अधिकता को इंगित करता है।

पूर्ण प्रतियोगी संतुलन का विश्लेषण बताता है कि यह उद्योग में उपलब्ध अधिशेष को अधिकतम करता है। इसीलिए यह आर्थिक दृष्टि से दक्ष है। प्रतियोगी संतुलन बिंदु E पर है जो इस तथ्य को इंगित करता है कि उपभोक्ता को इस स्थिति में किसी भी अन्य से अधिक उपयोगिता या आर्थिक अधिशेष प्राप्त होगा। इस बिंदु पर इसे निम्नलिखित प्रकार समझा जा सकता है–

क) P = MU, अर्थात् उपभोक्ता उस सीमा तक खाद्यान्न खरीदना पसंद करते हैं जहाँ P = MU हो, इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को उपभोग की गयी खाद्यान्न की अतिरिक्त इकाई से संतुष्टि की P यूटिल्स (utils) तक लाभ हो रहा है। यूटिल्स उपयोगिता या संतुष्टि के मापन की इकाई है।

ख) P = MC, उत्पादक के रूप में, प्रत्येक व्यक्ति खाद्यान्न की आपूर्ति उस बिंदु तक करता रहता है जहाँ खाद्यान्न की कीमत आपूर्ति किए गए खाद्यान्न की अंतिम इकाई की लागत के बराबर हो जाती है (MC खाद्यान्न की अंतिम इकाई के उत्पादन के बदले आराम के त्याग के रूप में खाद्यान्न की सीमांत लागत है) इस अवस्था में कीमत आराम–समय संतुष्टि की यूटिल्स के बराबर है जो कि खाद्यान्न की अंतिम इकाई का उत्पादन करने में खत्म हो गया है।

ग) इन दोनों समीकरणों को एक साथ रखने पर हमें MU = MC की स्थिति प्राप्त होती है। इसका अर्थ यह है कि उपभोग किए गए खाद्यान्न की अंतिम इकाई से प्राप्त यूटिल्स इसी इकाई का उत्पादन करने में त्यागे गए आराम की यूटिल्स के ठीक बराबर है। उपयोग की गयी खाद्यान्न की अंतिम इकाई से समाज को प्राप्त सीमांत लाभ उस इकाई का उत्पादन करने से समाज की सीमांत लागत के बराबर है। यह इस बात की गारंटी है कि पूर्ण प्रतियोगी संतुलन ही दक्ष संतुलन है।

अन्य अनेक वस्तुओं पर भी लागू कर दिए जाने से परिणाम में कोई परिवर्तन नहीं होगा। ऐसे सामान्यीकृत मामले में, नियम एक जैसे रहते हैं। उपयोगिता अधिकतमीकरण करने वाले उपभोक्ता अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर उस समय तक खर्च करते रहते हैं जब तक कि प्रत्येक वस्तु के क्रय पर खर्च किए गए अंतिम रुपये से प्राप्त उपयोगिता आपस में बराबर न हो जाए। चूंकि मुद्रा की यह सीमांत उपयोगिता कीमत अनुपातों के बराबर है जो उनको सापेक्ष पूर्ण प्रतियोगिता में संबंधित उत्पादों की सीमांत लागतों के अनुपात के बराबर है। कतिपय शर्तों के अधीन यह स्थिति पूर्ण प्रतियोगिता में दक्षता की गारंटी देती है जो यह बताता है कि किसी अन्य उपभोक्ता की उपयोगिता में कमी लाए बिना किसी एक उपभोक्ता की उपयोगिता में वृद्धि नहीं की जा सकती।

बोध प्रश्न 2

1) पूर्ण प्रतियोगिता बाज़ार में दक्षता प्राप्त करने के लिए सीमांत लागत की बुनियादी भूमिका को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

2) सामान्य संतुलन विश्लेषण में उपभोक्ता की उपयोगिता का अधिकतमीकरण तथा फर्म की लागत का न्यूनीकरण क्या भूमिका निभाते हैं?

....

....

....

3) पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की फर्म की लागत संरचना तथा ऐसी फर्म की कीमत एवं उत्पादन के निर्धारण में इसकी उपादेयता की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

16.5 प्रतियोगी कीमतें एवं दक्षता : क्षेम अर्थशास्त्र का प्रथम मूल प्रमेय सिद्धांत

पूर्ण प्रतियोगिता एवं संसाधनों के दक्ष आवंटन के बीच संबंध के सार को इस प्रकार समझाया जा सकता है :

- संसाधनों का पैरेटो दक्ष आवंटन प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि (सिवाय उस दशा के जहां कोनेदार समाधान उत्पन्न होता हो) X और Y दो वस्तुओं के बीच आदान-प्रदान की दर (Rate of trade-off) सभी आर्थिक एजेंटों के लिए एक समान हो। दूसरे शब्दों में, सभी उत्पादकों के लिए तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर तथा सभी उपभोक्ताओं के लिए प्रतिस्थापन की सीमांत दर के बराबर हो।
- पूर्ण प्रतियोगी अर्थव्यवस्था में, वस्तु X एवं वस्तु Y की कीमतों का अनुपात (p_x/p_y) सभी आर्थिक एजेंटों के लिए अदला-बदली की सामूहिक दर (common rate of trade-off) प्रदान करता है जिस पर वे समायोजन करते हैं। क्योंकि व्यक्तियों के उपयोगिता अधिकतमीकरण निर्णयों एवं फर्मों के लाभ-अधिकतमीकरण निर्णयों, दोनों में ही कीमतों को स्थायी प्राचल माना जाता है। ऐसी स्थिति में X और Y के बीच लेन-देन की सभी दरें बाज़ार में कीमतों के अनुपात के बराबर होंगी।

$$MRTS_{x,y} = MRS_{x,y} = \frac{p_x}{p_y}$$

- पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में सभी एजेंट एकसमान कीमतों का सामना करते हैं, सभी लेन-देन ऑफ बराबर होती हैं तथा दक्ष आवंटन प्राप्त हो जाता है। यही **क्षेम अर्थशास्त्र का पहला मूल प्रमेय** है।

इस सिद्धांत के दक्षता गुणों को चित्र 16.6 में दर्शाया गया है।

यद्यपि PP वक्र के सभी बिंदुओं पर उत्पादन संयोग तकनीकी रूप से दक्ष हैं, लेकिन केवल x*, y* संयोग ही पैरेटो अनुकूलतम है। एक पूर्ण प्रतियोगी संतुलन कीमत अनुपात $P^*_x = P^*_y$ अर्थव्यवस्था को पैरेटो दक्ष समाधान की ओर ले जाता है।

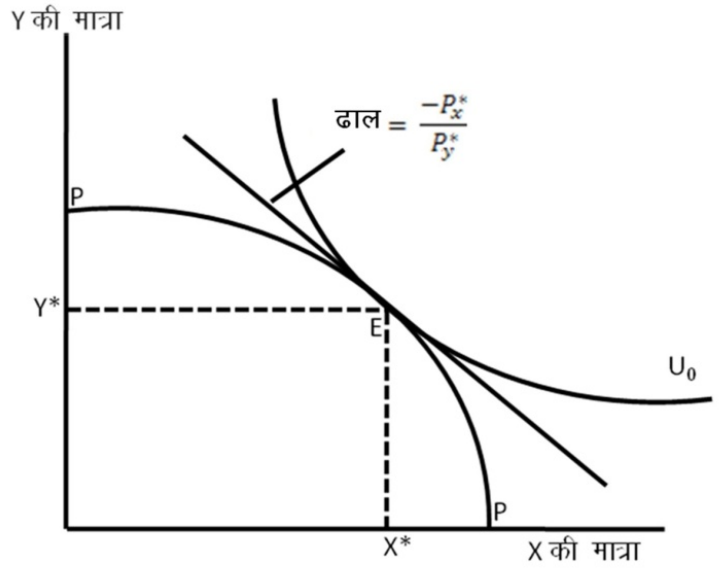

चित्र 16.6 : उत्पाद मिश्रण में प्रतियोगी संतुलन

चित्र 16.6 में दिए हुए उत्पादन संभावना सीमा वक्र PP तथा समभाव वक्रों द्वारा प्रदर्शित प्राथमिकताओं के बीच यह स्पष्ट है कि x^*, y^* संयोग दक्ष उत्पाद मिश्रण प्रदान करता है। संभवतया किसी केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था में आयोजना बोर्ड द्वारा अथवा वैकल्पिक रूप से प्रतियोगी बाज़ार में फर्मों तथा व्यक्तियों के स्व-हितों से x^*, y^* को निर्धारित किया जा सकता है। इस मॉडल में केवल p_x^*/p_y^* के कीमत अनुपात के साथ माँग और आपूर्ति आपस में बराबर होगी तथा बिंदु E पर दक्ष उत्पाद मिश्रण प्राप्त होगा जहाँ $MRS_{x,y}$ (तटस्थता वक्र का ढाल) तथा $MRTS_{x,y}$ (समोत्पाद वक्र का ढाल) तथा p_x/p_y (बजट रेखा का ढाल) आपस में बराबर है।

$$MRS_{x,y} = MRTS_{x,y} = p_x/p_y$$

कीमत तंत्र यह सुनिश्चित करता है कि न केवल उत्पादन तकनीकी रूप से दक्ष है (उत्पाद संयोग उत्पादन संभावना सीमा पर स्थित हैं) वरन् माँग एवं आपूर्ति की शक्तियाँ पैरेटो दक्ष उत्पाद संयोग पर ले जाती हैं। यही **क्षेम अर्थशास्त्र का पहला मूल प्रमेय** है।

प्रतियोगी संतुलन एवं पैरेटो दक्षता मुक्त अर्थव्यवस्था के लिए ''वैज्ञानिक'' समर्थन प्रदान करती है, जो सरकार के हस्तक्षेप के बिना मुक्त अर्थव्यस्था की अवधारणा पर आधारित है। उदाहरणार्थ, आदम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन्स में एक उदाहरण द्वारा व्यक्त किया था *''यह बेकर की जनसेवा (Public spirit) की भावना नहीं है जो उपभोग हेतु व्यक्तियों को ब्रेड प्रदान करती है बल्कि बेकर (एवं अन्य उत्पादक) बाज़ार से संकेत पाकर अपने हित की खातिर ही परिचालन करते हैं। व्यक्ति भी अपनी आयों के आवंटन के निर्णय करते समय इन्हीं संकेतों के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं।''* सुगम तरीके से चल रही इस प्रक्रिया में सरकार द्वारा किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप पैरेटो दक्षता में हानि के रूप में ही परिलक्षित होगा।

तथापि, किसी ऐसे सैद्धांतिक विश्लेषण, जो वास्तविक जगत के सांस्थानिक विवरणों पर काफी कम ध्यान देता हो, के आधार पर कोई नीतिगत सिफारिश नहीं की जा सकती। इसके बावजूद प्रतियोगी प्रणाली का दक्षता गुण एक ऐसी सीमा तो प्रदान करता ही है जहाँ से उन कारणों का परीक्षण किया जा सकता है कि प्रतियोगी बाज़ार असफल क्यों होते हैं।

16.6 प्रतियोगी मान्यताओं से अलग हटना

विभिन्न कारक प्रतियोगी बाज़ारों को दक्षता हासिल करने की क्षमता में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं। ये हैं– (1) अपूर्ण प्रतियोगिता, (2) बाह्यताएँ, (3) सार्वजनिक वस्तुएँ, (4) अपूर्ण सूचनाएं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित प्रकार हैः

16.6.1 अपूर्ण प्रतियोगिता

'अपूर्ण प्रतियोगिता' में उन समस्त स्थितियों को शामिल किया जाता है जिनमें आर्थिक एजेंट बाज़ार कीमत निर्धारण की कुछ न कुछ शक्ति रखते हैं। अपने उत्पाद की नीचे की ओर गिरते हुए माँग वक्र का सामना कर रही फर्म इस तथ्य को समझ लेती है कि एक अतिरिक्त इकाई को बेचने से प्राप्त आगम उस इकाई की बाज़ार कीमत से कम है। क्योंकि यह सीमांत प्रतिफल ही है जो लाभ को अधिकतम करने के उद्देश्य से परिचालित फर्म को निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है। ऐसी स्थिति में बाज़ार कीमतों की तुलना में सीमांत आगम अधिक महत्त्पूर्ण हो जाता है। पैरेटो दक्षता प्राप्त करने के लिए बाज़ार कीमत सूचनात्मक संदर्भ प्रदान नहीं करती।

16.6.2 बाह्यताएँ

यदि फर्मों एवं व्यक्तियों के बीच अंतःक्रियाएं बाज़ार कीमत में यथोचित रूप से परिलक्षित नहीं हों तो प्रतियोगी कीमत प्रणाली संसाधनों का आवंटन दक्षता पूर्ण तरीके से करने में

असफल हो सकती है। उदाहरणार्थ, औद्योगिक धुएं एवं कचरे से वायु प्रदूषित हो सकती है। ऐसी स्थिति को बाह्यता कहा जाता है। फर्म के उत्पादन स्तर तथा व्यक्तियों के क्षेम के बीच की इस अंतःक्रिया पर कीमत प्रणाली में विचार नहीं किया जाता। बाह्यताओं की उपस्थिति में बाज़ार कीमत वस्तु के उत्पादन की सभी लागतों को परिलक्षित नहीं करती। निजी एवं सामाजिक सीमांत लागत के बीच अंतर आ (divergence) जाता है और ये अतिरिक्त सामाजिक लागतें (या संभवतया लाभ) बाज़ार कीमतों में दिखाई नहीं देतीं। इस प्रकार बाज़ार कीमतों में संसाधनों का दक्ष आवंटन स्थापित करने के लिए आवश्यक वास्तविक लागत के बारे में कोई सूचना नहीं होती।

16.6.3 सार्वजनिक वस्तुएँ

सार्वजनिक वस्तुओं की कीमत निर्धारण में भी इसी प्रकार की समस्या उत्पन्न होती है। ऐसी वस्तुएँ, जैसे कि सार्वजनिक शिक्षा एवं जनस्वास्थ्य संस्थाएं निःशुल्क सेवाएं सरकार उपलब्ध कराती है। इनमें (प्रायः) दो गुण होते हैं जिनके कारण वे बाज़ार में उत्पादित होने के लिए उपयुक्त नहीं होतीं। प्रथम, ऐसी वस्तुओं के उपभोग में प्रतिद्वंद्व नहीं होता और लोग उनका उपभोग शून्य लागत पर कर सकते हैं। यह गुण बताता है कि ऐसी वस्तुओं की 'सही' कीमत शून्य है जो कि बाज़ार के परिचालन हेतु स्पष्टतया एक समस्या है। अनेक सार्वजनिक वस्तुओं का दूसरा गुण गैर-अपवर्जी (Non-exclusion) होना है। अर्थात् किसी भी व्यक्ति को ऐसी वस्तुओं का उपभोग करने से वंचित नहीं किया जा सकता। इसलिए अधिकांश उपभोक्ता ''निःशुल्क सवारी'' रुख अपनाते हुए यही मानकर चलते हैं कि वे जिस सेवा या वस्तु का उपभोग कर रहे हैं, उसका भुगतान कोई अन्य करेगा। सार्वजनिक वस्तुओं के ये दोनों गुण बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के लिए गंभीर समस्याएं उत्पन्न करते हैं।

16.6.4 अपूर्ण सूचनाएँ

पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में कीमत निर्धारण की दक्षता पूर्ण सूचना की उपलब्धता की मान्यता पर आधारित है, जो बाज़ार में कार्यरत सभी उत्पादकों एवं क्रेताओं को प्राप्त होती है। अंतर्जात रूप से यह मानकर चला जाता है कि बाज़ार में बेची और खरीदी जाने वाली वस्तुओं तथा सेवाओं के बारे में उत्पादकों और क्रेताओं को पूरी जानकारी होती है। फर्में यह मानकर चलती हैं कि उन्हें उनके उद्योग में लागू उत्पादन फलनों की पूरी जानकारी है। उपभोक्ताओं के बारे में यह मान लिया जाता है कि उन्हें वस्तुओं एवं सेवाओं की गुणवत्ता तथा कीमतों के बारे में पूरी जानकारी है। यदि यह मान्यता टूटती है और उपभोक्ता वस्तु की गुणवत्ता तथा कीमत के बारे में पूरी तरह से जानकार नहीं हैं अथवा/और फर्मों को उद्योग में उत्पादन प्रक्रिया की पूरी जानकारी नहीं है तो पूर्ण प्रतियोगिता वाली कीमत में भी दक्षता प्राप्त करना कठिन होगा।

दक्षता प्राप्त करने की ये चार बाधाएं यह इंगित करती हैं कि लोक हितार्थ नीतियाँ निर्धारित करते समय पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार के दक्षता गुणों को लागू करने के मामले में सावधानी बरती जानी चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) व्याख्या कीजिए कि किसी प्रतियोगी बाज़ार में उपयोगिता अधिकतमीकरण, लागत न्यूनीकरण तथा लाभ को अधिकतम करना किस प्रकार संसाधनों के आवंटन को आर्थिक दृष्टि से दक्ष बना देता है।

....

....

....

2) वे विकृतियाँ बताइए जिनके चलते पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार में दक्षता प्राप्त करने में असफलता ही मिलती है।

....

....

....

16.7 सार-संक्षेप

संसाधनों के दक्ष आवंटन हेतु आवश्यक है कि किन्हीं दो वस्तुओं के बीच आदान-प्रदान (Trade off) की दर सभी आर्थिक कर्ताओं के लिए एकसमान हो। एक पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में उत्पादित वस्तुओं की कीमतों के बीच अनुपात इन वस्तुओं के लिए एक जैसी आदान-प्रदान दर प्रदान करता है जिससे सभी अभिकर्ता समायोजन करके बराबरी के स्तर पर आ जाते हैं। दीर्घकाल में पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में संचालित फर्म उत्पादक एवं आवंटन दोनों ही प्रकार से दक्ष होती हैं। अर्थात् पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में दीर्घकाल में $AR = AC_{min}$ (फर्म उत्पादक दृष्टि से दक्ष है) तथा $P (=AR) = MC$ (फर्म आवंटनात्मक रूप से दक्ष है)।

तथापि, यहाँ यह समझ लेना भी अति महत्त्वपूर्ण है कि पूर्ण प्रतियोगी संतुलन भले ही दक्ष क्यों न हो लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि सभी उपभोक्ता समान रूप से इससे लाभान्वित हो रहे होंगे। किसी एक उपभोक्ता का क्षेम उसके पास उपलब्ध दुर्लभ आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर करता है। ऐसे संसाधन समाज में समान रूप से वितरित नहीं होते। असमान रूप से वितरित संसाधनों वाली अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक नहीं है कि वह दक्ष हो। ऐसी अर्थव्यवस्था/समाज में अपने संसाधनों से बड़ी संख्या में बंदूकों एवं मक्खन का भले ही उत्पादन किया जा रहा हो, लेकिन कुछ धनवान जहाँ मक्खन का उपभोग कर रहे होंगे तथा इसे अपनी बिल्लियों को खिला रहे होंगे, वही बंदूकों से धनवानों के मक्खन की रक्षा की जा रही होगी। इसलिए, समाज, केवल ऐसी दक्षता पर निर्भर नहीं रह सकता। कोई समाज बाज़ार के परिणाम को बदल कर समता में सुधार करने अथवा आय एवं धन के वितरण को उचित व समतामूलक बनाने का निर्णय ले सकता है। राष्ट्र ऊँची आय वालों की आय एवं संपत्ति पर प्रगतिशील कर लगा सकता है तथा इससे होने वाली आय को निर्धनों के लिए आवश्यक भोजन, विद्यालय तथा स्वास्थ्य देखभाल पर खर्च कर सकता है।

इस विश्लेषण से यह भी समझा गया कि सीमांत (लागत, कीमत, आगम तथा उपयोगिता) शब्द दक्षता के लिए एक बुनियादी अवधारणा है।

16.8 संदर्भ ग्रंथादि

1) David A. Besanko, Ronald R. Braeutigam and Michael J. Gibbs, *Microeconomics*, 4th Edition, John Wiley and Sons, p. 648-721.

2) Kautsoyiannis, A. (1979), *Modern Micro Economics*, London: Macmillan.

3) KristerAhlersten, (2008), *Essentials of Microeconomics*, First Edition, bookboon.com, p. 76-87.

4) Sanjay Rode, (2013), *Modern Microeconomics*, First Edition, bookboon.com, p. 173-227.

16.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 16.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) उपभाग 16.2.1 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) उपभाग 16.2.2 पढ़ें और उत्तर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 16.3 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) भाग 16.4 पढ़ें और उत्तर लिखें।

3) भाग 16.4 पढ़ें और उत्तर लिखें।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 16.3 एवं 16.4 के साथ भाग 16.5 पढ़ें और उत्तर लिखें।

2) भाग 16.6 एवं 16.7 पढ़ें और उत्तर लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 17 बाजार तंत्र की दक्षता : बाजार की विफलता एवं राज्य की भूमिका

संरचना

17.0 उद्देश्य

17.1 विषय प्रवेश

17.2 पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताओं से हटना

17.2.1 अपूर्ण बाजार

17.2.2 बाह्यताएँ

17.2.3 सार्वजनिक वस्तुएं

17.2.4 अपूर्ण सूचनाएँ

17.2.5 प्रतिकूल चयन

17.2.6 नैतिक द्वंद्व

17.3 सीमांत सामाजिक लागतों एवं सीमांत निजी लागतों तथा लाभों में विचलन

17.4 बाह्यताओं का आंतरिकरण

17.4.1 सार्वजनिक हस्तक्षेप की आवश्यकता

17.4.2 कर एवं साहाय्य

17.4.3 प्रत्यक्ष विनियमन : प्रशासनिक उपाय

17.4.3.1 निजी स्तर पर निर्धारित कीमतों का विनियमन

17.4.3.2 गतिविधियों का विनियमन

17.4.4 सार्वजनिक प्रावधान : सार्वजनिक वस्तुओं की आपूर्ति का विस्तार

17.5 सार-संक्षेप

17.6 संदर्भ ग्रंथादि

17.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप इस तथ्य को समझने में सक्षम होंगे कि अनेक कारणों से अपूर्णताओं के चलते बाज़ार प्रभावित हो सकता है। वास्तव में, पूर्ण प्रतियोगिता की अनेक मान्यताओं से न बच सकने वाला या अपरिहार्य विचलन हो सकता है। इसलिए आप निम्नलिखित के बारे में अधिक व्यापक और अच्छी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे :

- बाज़ार में अपूर्णताएं;
- बाह्यताओं की समस्याएं;
- सार्वजनिक वस्तुओं/सेवाओं की विद्यमानता, जिसमें अपवर्जनहीनता तथा गैर-प्रतिद्वंद्विता के अभिलक्षण होते हैं, ये दोनों भी कुछ बाह्य लागतों/लाभों को उत्पन्न करते हैं;
- सूचना की अपूर्णता, जो निर्णयन प्रक्रिया को प्रतिकूल ढंग से प्रभावित करती है;
- बाज़ार में विभिन्न एजेंटों/कार्य करने वालों के लिए प्रतिकूल चयन की समस्या एवं नैतिक द्वंद्व/जोखिम;

- किस प्रकार उपर्युक्त सभी बातें जहाँ एक ओर सामाजिक एवं निजी सीमांत लागतों के बीच तो दूसरी ओर लाभों के बीच विचलन उत्पन्न करते हैं; तथा
- सार्वजनिक हस्तक्षेपों के द्वारा बाह्यताओं के आंतरिकरण की आवश्यकता, यह कार्य करारोपण एवं साहाय्यों, निजी रूप से निर्धारित कीमतों के विनियमन, कतिपय गतिविधियों के ऊपर प्रत्यक्ष नियंत्रण एवं सार्वजनिक संगठनों के माध्यम से जनस्वास्थ्य तथा शिक्षा जैसी कतिपय सेवाएं प्रदान करने आदि के माध्यम से किया जा सकता है।

17.1 विषय प्रवेश

पिछली इकाई में, हमने पढ़ा कि पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार प्रणाली में हम वैकल्पिक प्रयोगों में संसाधनों के आवंटन में प्रौद्योगिकीय एवं आर्थिक दक्षताएँ तथा संसाधनों के स्वामियों के बीच आय के वितरण की दक्षताएँ प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं। आपने पहले क्षेम सिद्धांत को भी समझा जिसमें पैरेटो दक्षता पर आधारित सभी विचार सम्मिलित हैं। हम इकाई 16 की पठन-पाठन सामग्री के आधार पर समाज की नैतिक समस्याओं के समाधान हेतु बाज़ार की अनुकूलता एवं वांछनीयता में अतिविश्वास से भर जाते हैं।

तथापि, अब हम पूर्ण प्रतियोगिता वाले बाज़ार की मान्यताओं से संभावित विचलनों का परीक्षण करते हैं। ये मान्यताएँ निम्नलिखित प्रकार हैं :

- क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या;
- एकसमान उत्पाद;
- पूर्ण सूचना;
- क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच सूचना का स्वतंत्र प्रवाह;
- फर्मों के बाज़ार में प्रवेश एवं बाहर निकलने में कोई बाधाएं नहीं होना;
- कोई भी अपनी किसी गतिविधि से बाज़ार पर नियंत्रण स्थापित नहीं कर सकता;
- किसी प्रकार की बाह्यताएँ न होना।

वर्तमान इकाई के भाग 17.2 में हम देखेंगे कि किस प्रकार उपर्युक्त मान्यताओं से हट जाने से उत्पन्न परिस्थितियाँ बाज़ार को दक्षता एवं अनुकूलतमता से दूर ले जाते हैं। हमने ऐसी परिस्थितियों को एक सामूहिक नाम बाज़ार की विफलता दिया है। इस भाग में ऐसी 6 परिस्थितियों का परीक्षण किया गया है। हमने अपने विश्लेषण को प्रारंभिक स्तर पर ही रखा है। अर्थशास्त्र के उच्चतर अध्ययन में इस पर विस्तार से चर्चा की जाती है।

भाग 17.3 में बाज़ार तंत्र की 'दक्षता' की विफलता की घटनाओं के लिए उत्तरदायी कारकों की श्रृंखला के केवल एक तत्व का परीक्षण किया गया है। यह निजी एवं सामाजिक सीमांत लागतों एवं लाभों के बीच विचलन है।

भाग 17.4 में बाह्यताओं को उत्पन्न करने वाले कुछ कारकों पर विचार किया गया है। इनके निराकरण के उपायों को बाह्यताओं का आंतरिकरण नाम दिया गया है। सार्वजनिक वस्तुओं– विशेष रूप से स्वास्थ्य एवं शिक्षा के प्रावधान द्वारा समस्या के समाधान के उपागम पर भी विचार किया गया है। अर्थशास्त्रियों द्वारा विश्वास किया जाता है कि सार्वजनिक प्रावधानों द्वारा सृजित सकारात्मक बाह्यताओं के माध्यम से समाज में विद्यमान नकारात्मक बाह्यताओं के दुष्प्रभावों को यथासंभव कम से कम किया जा सकता है।

17.2 पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताओं से हटना

इकाई 16 में आपने पूर्ण प्रतियोगिता के निहितार्थों को समझा, विशेष रूप से विभिन्न उपयोगों के बीच तथा विभिन्न फर्मों के बीच संसाधनों के आवंटन में उत्पादन की दक्षता, तकनीकी दक्षता तथा आवंटनात्मक दक्षता तथा उत्पाद मिश्रण से संबंधित निर्णयन में दक्षता की अवधारणाओं को समझा। यहाँ 'दक्षता' से आशय ''पैरेटो दक्षता'' से है।

इसके बाद हमने पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की फर्म के लिए दक्षता तथा पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार में दक्षता का विश्लेषण किया। इससे हमें अंततः क्षेम अर्थशास्त्र के प्रथम मूल प्रमेय की जानकारी प्राप्त हुई।

भाग 16.6 में हमने बाज़ार के पूर्ण प्रतियोगिता से विचलित होने से उत्पन्न परिस्थितियों का अध्ययन किया। वर्तमान इकाई हमें इस तथ्य से अवगत कराती है कि पूर्ण प्रतियोगिता की आदर्श स्थिति से हट जाने पर क्या होता है, विशेष तौर पर, इसके आवंटन एवं वितरण की दक्षता के लिए क्या निहितार्थ होते हैं। यहाँ इस इकाई में हम बाज़ार की अपूर्णताओं, सकारात्मक एवं नकारात्मक बाह्यताओं, सार्वजनिक वस्तुओं की विद्यमानताओं के प्रभावों, सूचना की अपूर्णताओं, प्रतिकूल चयन तथा नैतिक द्वंद्व का अध्ययन करेंगे।

17.2.1 अपूर्ण बाज़ार

जिस किसी बाज़ार में पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताएँ लागू नहीं हो पातीं वह अपूर्ण बाज़ार होता है। जैसे बाज़ार में क्रेताओं एवं विक्रेताओं की संख्या अधिक न होना। ऐसी भी स्थिति हो सकती है जहाँ कुछ वस्तुओं का उत्पादन किसी एक या कुछ ही विक्रेताओं द्वारा किया जा रहा हो या कुछ वस्तुएं केवल कुछ ही क्रेताओं द्वारा क्रय की जा रही हों। ऐसी परिस्थितियों के कतिपय उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

क) जब कुछ वस्तुएँ केवल एक ही विक्रेता द्वारा उत्पादित या बेची जा रही हों। इसे बाज़ार संरचना में एकाधिकार कहा जाता है।

- उदाहरणार्थ, रेल सड़क परिवहन में भारतीय रेल को एकाधिकार प्राप्त है।
- अपने-अपने राज्यों में राज्य विद्युत मण्डलों को विद्युत उत्पादन एवं वितरण में एकाधिकार प्राप्त है।

ख) जब कुछ वस्तुएँ कुछ ही विक्रेताओं द्वारा उत्पादित या बेची जा रही हों–

- एयरलाइन्स उद्योग, जहाँ एयर इंडया, जेट एयरवेज़, इण्डिगो जैसी कुछ ही कंपनियाँ हैं।
- मोबाइल सेवा प्रदाता जैसे कि बी.एस.एन.एल., वोडाफ़ोन, एयरटेल आदि।

ग) जहाँ कुछ वस्तुओं के कुछ ही क्रेता हों उसे क्रेता अल्पाधिकार (oligopsonic) कहा जाता है–

- कोको, चाय, तंबाकू जैसे कृषि उत्पाद कुछ ही उद्योगों द्वारा क्रय किए जाते हैं।
- लोकोमोटिव उद्योग में भारतीय रेल देश में अकेला क्रेता है।

17.2.2 बाह्यताएँ

बाह्यताएँ उस अवस्था में उत्पन्न होती हैं जब मान्यताओं का उल्लंघन किए जाने से तीसरे पक्ष को लागत या लाभ होने लगता है। दूसरे शब्दों में, किसी एक पक्ष द्वारा

किया गया कोई कार्य किसी अन्य पक्ष की खुशहाली पर सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभाव डालने लगता है तथा इससे तीसरे पक्ष द्वारा वहन की जाने वाली लागत या उसे होने वाले लाभ बाज़ार कीमत में परिलक्षित नहीं हो पाते। उदाहरणार्थ, धूम्रपान करने वाला व्यक्ति धूम्रपान करने से स्वयं आनंद या प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है लेकिन धूम्रपान के धुएँ से उसके पास बैठा व्यक्ति प्रभावित होता है। इसी प्रकार किसी एक निजी समारोह में ऊँची आवाज़ में बजाए जा रहे संगीत के शोर से पड़ोसियों की शांति भंग हो सकती है।

17.2.3 सार्वजनिक वस्तुएँ

अदक्षता या बाज़ार की विफलता का दूसर बड़ा स्रोत– वे वस्तुएं हैं जिनका उत्पादन करना निजी विक्रेताओं या फर्मों के व्यावसायिक हित में नहीं होता। सामान्य तौर पर ऐसी वस्तुएं समाज के लिए हितकर होती हैं लेकिन निजी फर्म इन्हें उत्पादित करने में कोई रुचि नहीं रखती। दूसरे शब्दों में, सार्वजनिक वस्तुओं का उपयोग केवल उन्हीं उपभोक्ताओं तक सीमित नहीं रखा जा सकता जो इनके उपभोग हेतु कोई मूल्य या शुल्क चुकाते हैं। उदाहरणार्थ, किसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर कार या बस चलाने वालों को टोल चुकाना पड़ता है लेकिन पैदल चलने वालों को उस पर चलने से रोका नहीं जा सकता। दूसरा प्रमुख उदाहरण रक्षा सेवाओं पर किया जाने वाला व्यय है जिससे पूरे समाज की सुरक्षा होती है। ऐसी सेवाओं और वस्तुओं को **सार्वजनिक वस्तुएँ** कहा जाता है।

सार्वजनिक वस्तुओं के दो प्रमुख अभिलक्षण होते हैं। इनका उपभोग गैर-अपवर्जनीय एवं गैर-प्रतिद्वंद्वितापूर्ण होता है। इन्हीं दो अभिलक्षणों के कारण बाज़ार उत्पादकों के लिए इन वस्तुओं एवं सेवाओं को निजी उपभोक्ताओं को बेच पाना संभव नहीं हो पाता।

- **गैर-अपवर्जनीयता** का अर्थ यह है कि ऐसी वस्तुओं एवं सेवाओं के उपभोग से उन लोगों को वंचित नहीं किया जा सकता जो इनके लिए भुगतान नहीं करते। उदाहरणार्थ, देश की सीमा पर रक्षा सेनाएं सभी देशवासियों की सुरक्षा करती हैं। किसी को भी इस सुरक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत अपवर्जी वस्तुएँ हैं जैसे कि टेलीफोन सेवाएं, जो इनका प्रयोग करना चाहता है उसे इसके लिए भुगतान करना होगा।

- **गैर-प्रतिद्वंद्विता** का अर्थ यह है कि किसी एक व्यक्ति द्वारा इनका उपभोग करने से किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उपभोग किए जा सकने वाले हिस्से में कोई कमी नहीं आती। उदाहरणार्थ, सार्वजनिक पार्क में किसी व्यक्ति के घूमने या टहलने से किसी अन्य व्यक्ति के हिस्से में कोई कमी नहीं आती। किसी समिति में एक अतिरिक्त व्यक्ति को सदस्यता प्रदान करने से समिति के अन्य सदस्यों के हितों में कोई कमी नहीं आती। इसके विपरीत प्रतिद्वंद्वी वस्तुएं हैं जैसे कि पिज्ज़ा। यदि पिज्ज़ा का एक टुकड़ा किसी व्यक्ति द्वारा उपभोग कर लिया जाता है तो अन्य के सुलभ भाग सुनिश्चित तौर पर कम हो जाते हैं।

तालिका 17.1 में गैर-अपवर्जी तथा गैर-प्रतिद्वंद्वी वस्तुओं को दर्शाया गया है। ये वे वस्तुएँ हैं जो विशुद्ध सावर्जनिक या विशुद्ध निजी वस्तुएं हैं। इससे इतर ऐसी भी वस्तुएँ हैं जो अर्द्ध गैर-अपवर्जी एवं अर्द्ध गैर-प्रतिद्वंद्वी हैं। अर्थात् अर्द्ध सार्वजनिक वस्तुएं हैं। उदाहरणार्थ, सामूहिक संसाधन वे संसाधन हैं जिनका कोई स्वामी नहीं है लेकिन जिसके उपभोक्ता अनेक हैं। उदाहरणार्थ, समुद्र का कोई स्वामी नहीं है लेकिन उसमें मछलियाँ कोई भी पकड़ सकता है।

तालिका 17.1 : गैर-अपवर्जी एवं गैर-प्रतिद्वंद्वी वस्तुओं के संयोजन

		गैर-प्रतिद्वंद्वी	
		हाँ	**नहीं**
गैर-अपवर्जी	**हाँ**	विशुद्ध सार्वजनिक वस्तुएँ : राष्ट्रीय रक्षा सेवाएँ, स्ट्रीट लाइट्स, न्यायिक प्रणाली	सामूहिक संसाधन– गाँव के चारागाह, समुद्र से मछलियाँ पकड़ना, नदियों से सिंचाई हेतु जल लेना
	नहीं	टोल वस्तुएँ, थियेटर-सिनेमाघर, टोल-टैक्स रोड, केबल, टीवी	विशुद्ध निजी वस्तुएँ : पिज़्ज़ा, मोबाइल फोन

सार्वजनिक वस्तुओं में अत्यधिक धनात्मक बाह्यता पायी जाती है। सार्वजनिक वस्तुओं के मामले में सबसे बड़ी समस्या **निःशुल्क सवारी या मुफ्तख़ोरी** की है। निःशुल्क सवारी वह स्थिति है जब कोई उपभोक्ता बिना कोई शुल्क चुकाए किसी वस्तु या सेवा का उपभोग करता है। इस समस्या के चलते सामूहिक संसाधनों का सदैव ही अति उपभोग या विदोहन होता है।

17.2.4 अपूर्ण सूचनाएँ

अदक्षता या बाज़ार विफलता का दूसरा बड़ा स्रोत क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच अपूर्ण प्रतियोगिता है इसका अर्थ पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताओं का उल्लंघन होना है, जैसे कि क्रेताओं एवं विक्रेताओं को उत्पाद के अभिलक्षणों तथा कीमतों की पूर्ण जानकारी नहीं होना, आदि। अपूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति को समझने के लिए नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

क) पुरानी कार बेचने वाले को कार के बारे में इसके क्रेता की तुलना में अधिक जानकारी होना।

ख) श्रम बाज़ार में श्रमिकों को अपने कौशल के बारे में अधिक जानकारी होती है जबकि सेवायोजकों को तुलना करने के लिए कामगारों की गुणवत्ता की सीमित जानकारी ही होती है।

ग) बीमा कंपनी को अपने ग्राहकों द्वारा वहन की जा रही जोखिमों की कम ही जानकारी होती है क्योंकि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की भिन्नताओं के चलते ग्राहकों द्वारा वहन की जाने वाली जोखिमों में अंतर होता है।

17.2.5 प्रतिकूल चयन

किसी बाज़ार प्रक्रिया में प्रतिकूल चयन उस स्थिति को इंगित करता है जिसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं की उत्पाद सूचना तक पहुँच अलग-अलग होती है। उदाहरणार्थ, बाज़ार में स्वास्थ्य बीमा हेतु दो समूह हैं, जैसे कि धूम्रपान करने वाले तथा धूम्रपान न करने वाले। बीमा कंपनी प्रीमियम निर्धारित करने में दोनों में विभेद नहीं कर सकती। स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी जहाँ धूम्रपान करने वालों के लिए बेहतर है क्योंकि वे धूम्रपान के प्रतिकूल प्रभाव से औसत से कम आयु मर सकते हैं। धूम्रपान न करने वाले ग्राहक भी अलाभकारी स्थिति में हैं क्योंकि कम जोखिम होते हुए भी उन्हें अधिक प्रीमियम भुगतान करना पड़ रहा है। ऐसी कोई बीमा पॉलिसी नहीं है जो धूम्रपान करने वालों के लिए विशेष रूप से तैयार की गयी हो। इसलिए बाज़ार विफलता विद्यमान है। सरल शब्दों में, प्रतिकूल चयन अप्रभावी कीमतों के संकेतों से उत्पन्न होता है क्योंकि बाज़ार में अधिकांश सूचना कीमतों के माध्यम से हस्तांतरित होती है।

17.2.6 नैतिक द्वंद्व

नैतिक द्वंद्व उस अवस्था में उत्पन्न होते हैं जब करार करने वालों में से कोई एक पक्ष करार के कतिपय प्रावधानों से मुकर जाता है तथा अपने व्यवहार से करार करने वाले अन्य पक्ष पर लागत थोप देता है। यहाँ पर धूम्रपान करने वालों और धूम्रपान न करने वालों का उदाहरण अधिक सटीक है। सामान्य परिदृश्य में धूम्रपान करने वालों के लिए धूम्रपान छोड़ने के अनेक लाभ तथा प्रोत्साहन हैं लेकिन इसके बावजूद धूम्रपान करने वाले अधिकांश लोगों का व्यवहार कुछ ऐसे संचालित होता है कि उनके जोखिम व्यवहार का एक बड़ा हिस्सा बीमा कंपनी द्वारा प्रत्यक्ष तौर पर तथा धूम्रपान न करने वाले बीमा पॉलिसी धारकों द्वारा परोक्ष तौर पर वहन किया जाएगा। इस प्रकार की स्थितियों से बाज़ार विफलताएं उत्पन्न होती हैं।

17.3 सीमांत सामाजिक लागतों एवं सीमांत निजी लागतों तथा निजी लाभों में विचलन

ध्यान रखें कि पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत फर्मों का प्रमुख उद्देश्य उत्पादन को उस स्तर पर रखकर अपने लाभ को अधिकतम करना है जहाँ कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है (P=MC)। बाह्यताएँ न होने पर फर्मों की यह निजी सीमांत लागत सामाजिक सीमांत लागत के बराबर होती है। लेकिन बाह्यताएँ विद्यमान होने पर कुछ ऐसी लागतें (लाभ) होती हैं जो अन्यों द्वारा वहन (प्राप्त) की जाती हैं। इन्हें बाह्य लागतें (या बाह्य लाभ) कहा जाता है। निजी लागतों तथा तृतीय पक्षीय लागतों का कुल योग सामाजिक लागतें कहलाता है। यही तर्क सामाजिक लाभों के आकलन पर लागू होता है।

जैसा कि आप जानते हैं कि सेवाओं और वस्तुओं की आपूर्ति वक्र इनका उत्पादन करने वाले उत्पादकों के सीमांत लागतों को व्यक्त करते हैं। यह वक्र दर्शाता है कि उत्पादन की विभिन्न मात्राओं के लिए उत्पादक क्या न्यूनतम कीमत स्वीकार करने के लिए तैयार है। बाह्यताएँ नहीं पाए जाने पर, इसे सीमांत निजी लागत (MPC) माना जा सकता है। यदि इनका उत्पादन करते समय किसी प्रकार की कोई नकारात्मक बाह्यता नहीं है तो यह सीमांत सामाजिक लागत (MSC) के बराबर है। यदि नकारात्मक बाह्यता है तो MSC > MPC सीमांत सामाजिक लागत एवं सीमांत निजी लागत के बीच का अंतर सीमांत बाह्य लागत के बराबर है। (सीमांत सामाजिक लागत = सीमांत निजी लागत + सीमांत बाह्य लागत) यहाँ सीमांत बाह्य लागतें (MEC) वे लागतें हैं जो उत्पादन करने वालों तथा उपयोग करने वालों से इतर तीसरे पक्ष या समाज द्वारा उत्पादन या उपभोग में प्रत्यक्षतः सम्मिलित हुए बिना ही वहन की जाती हैं। हम कह सकते हैं,

$$MSC = MPC + MEC$$

उपभोक्ता की दृष्टि से, किसी वस्तु या सेवा के लिए माँग वक्र इनका उपयोग करने वाले उपभोक्ताओं को प्राप्त होने वाले सीमांत लाभों को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि उत्पाद की विभिन्न मात्राओं के लिए उपभोक्ता किन उच्चतम कीमतों का भुगतान करने के लिए तैयार है। बाह्यताएँ न होने पर, हम सीमांत निजी लाभ पर विचार करते हैं (MPB)। यदि इनका प्रयोग करने पर कोई सकारात्मक या धनात्मक लाभ संबद्ध नहीं है तो यह सीमांत सामाजिक लाभ के बराबर है (MSB)। धनात्मक या सकारात्मक बाह्यता विद्यमान होने पर MSB > MPB उस मात्रा से अधिक है, अर्थात्

$$MSB = MPB + MEB$$

यहाँ सीमांत बाह्य लाभ (MEB) उस लाभ के बराबर है जो किसी ऐसे व्यक्ति को प्राप्त होता है जो उपभोग की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ नहीं है।

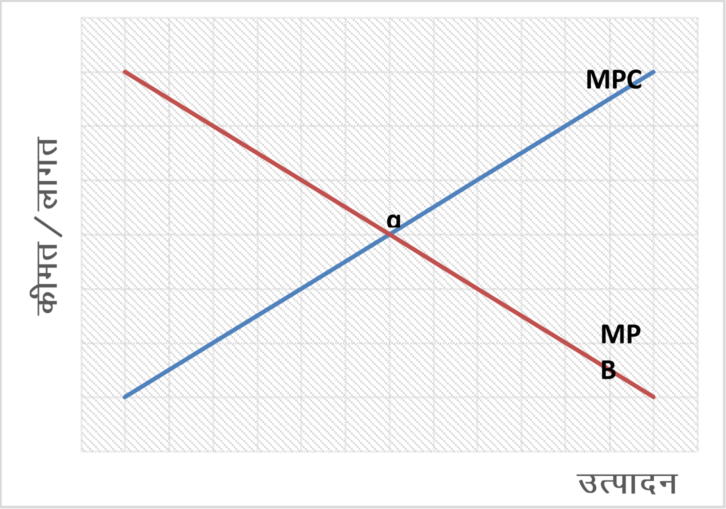

चित्र 17.1 : लाभ को अधिकतम करने वाला बाज़ार– कोई बाह्यता नहीं

चित्र 17.1 में किसी प्रकार की बाह्यता न होने पर बाज़ार संतुलन को दर्शाया गया है। उपभोक्ता के अधिमान को सीमांत निजी लाभ वक्र के द्वारा दर्शाया गया है (MPB)। जबकि उत्पादक के उत्पादन को आपूर्ति वक्र या सीमांत निजी लागत (MPC) वक्र के रूप में व्यक्त किया गया है। उत्पाद की संतुलन कीमत उस बिंदु पर है जहाँ MPB = MPC है। इस बिंदु पर कीमत एवं उत्पादन का अनुकूलतम स्तर क्रमश: P* एवं q* है। बाज़ार विफलता की विद्यमानता (जैसे कि धनात्मक अथवा ऋणात्मक बाह्यताएं) बाज़ार में ऐसी स्थिति पैदा करेगी जहाँ समाज के परिप्रेक्ष्य में या तो कम उत्पादन होगा या अधिक। ऋणात्मक बाह्यता की विद्यमानता में सामाजिक दृष्टि से अनुकूलतम उपलब्धि को चित्र 17.2 में प्रदर्शित किया गया है। बाह्य लागत की मौजूदगी में MSC MPC से अधिक होगी। इसलिए MSC वक्र आपूर्ति वक्र (MPC) के ऊपर हैं जो अतिरिक्त बाह्य लागतों की स्थिति को व्यक्त करता है। नया संतुलन ऐसे बिंदु पर होगा जहाँ कीमत P* से बढ़कर P^s हो जाती है तथा उत्पाद q* से गिरकर q^s रह जाता है। उत्पादन का बाज़ार स्तर अदक्ष तरीके से बाह्य लागत होने पर उत्पादन के स्तर से अधिक है। इसका सीधा-सा अर्थ है कि सामाजिक लाभ में हानि हो रही है। अर्थात् विशुद्ध लाभ की हानि (Dead weight loss) की स्थिति है। इसे छायादार त्रिभुज (चित्र 17.2) में दर्शाया गया है।

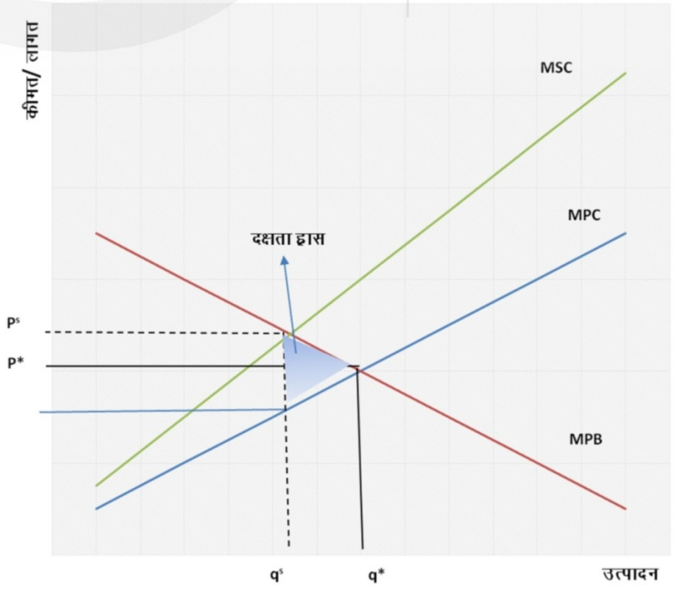

चित्र 17.2 : ऋणात्मक बाह्यता के साथ लाभ को अधिकतम करने वाला बाज़ार

ऋणात्मक बाह्यता की स्थिति में P>MPC, जो बाज़ार अदक्षता को दर्शाता है। दक्षता की दिशा बाह्यता की प्रकृति के अनुसार बदलती रहती है। सभी प्रकार की संभव बाह्यताओं के परिणाम निम्नलिखित प्रकार होते हैं :

- ऋणात्मक उत्पादन बाह्यताएँ अति उत्पादन में परिलक्षित होती हैं (विक्रेता)
- धनात्मक उत्पादन बाह्यताएँ अल्प उत्पादन में परिलक्षित होती हैं (विक्रेता)
- ऋणात्मक उपभोग बाह्यताएँ अति उपभोग में परिलक्षित होती हैं (क्रेता)
- धनात्मक उपभोग बाह्यताएँ अल्प उपभोग में परिलक्षित होती हैं (क्रेता)

17.4 बाह्यताओं का आंतरिकरण

भाग 17.2 एवं 17.3 में हमारा विश्लेषण एक अपरिहार्य निष्कर्ष की ओर ले जाता है। निष्कर्ष स्पष्ट है कि ''बाह्यताओं से बचा नहीं जा सकता''। कारण चाहे जो भी हो, अंततः ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है कि समाज के कुछ लोगों को बाह्य लाभ होगा तो कुछ लोगों को बाह्य लागतें भी वहन करनी पड़ सकती हैं। इकाई 16 में देखी गयी आदर्श स्थिति का यही कथन है ''ऐसी कभी सच नहीं होता, लेकिन क्या स्थिति इतनी निराशाजनक है।'' वर्तमान विश्लेषण एक वैकल्पिक रास्ता निकालता है और वह यह कि बाह्यताओं का आंतरिकरण ही कर लिया जाय। अर्थात् बाह्यताओं के धनात्मक अथवा ऋणात्मक प्रभावों को कम से कम करने के लिए उन्हें बाज़ार की गणनाओं में शामिल कर लिया जाय। हम कतिपय ऋणात्मक बाह्यताओं का निवारण करने के लिए कुछ सकारात्मक बाह्यताओं का सृजन भी कर सकते हैं (देखें उपभाग 17.4.4)। लेकिन बात स्पष्ट है : बाह्यताओं की मौजूदगी राज्य के हस्तक्षेप को अपरिहार्य बना देती है।

17.4.1 सार्वजनिक हस्तक्षेप की आवश्यकता

जैसा कि ऊपर हमने पढ़ा, जब कोई क्रिया धनात्मक या ऋणात्मक बाह्यता उत्पन्न करती है तो उत्पादन की सामाजिक अनुकूलतमता प्रभावित होती है। इस प्रकार, बाह्यता की मौजूदगी में, व्यक्तिगत (उत्पादक या उपभोक्ता) उद्देश्य अधिकतम सामाजिक क्षेम के रूप में परिलक्षित नहीं होता। इसलिए ऐसी परिस्थितियों में **सरकारी हस्तक्षेप** का आर्थिक औचित्य विद्यमान है। विद्यमान बाह्यता का आंतरिकरण सर्वाधिक उचित तरीका है। ऐसी नीतियाँ बनाते समय बाह्यताएँ उत्पन्न करने वाले उत्पादकों या उपभोक्ताओं पर विचार किया जाना चाहिए। बाह्यता की समस्या का समाधान करने के लिए सरकार या राज्य के हस्तक्षेप के सर्वाधिक मान्य दो उपागम इस प्रकार हैं :

17.4.2 कर एवं साहाय्य

बाह्यताओं को समायोजित करने का सर्वाधिक प्रतिष्ठित तरीका उन लोगों पर कर लगाना है जो बाह्यताएं पैदा करते हैं। इस उपागम को **पीगूवादी कर** कहते हैं। एक उदाहरण पर विचार कीजिए– कोयला आधारित तापय विद्युत गृह q^* विद्युत इकाइयाँ पैदा करता है। तथापि, इस प्रक्रिया में वातावरण को प्रदूषित करता है जिससे समाज के लिए ऋणात्मक बाह्यता पैदा होती है। इसलिए, विद्युत उत्पादन की निजी सीमांत लागत के अतिरिक्त बाह्य सीमांत लागत भी होती है। कुल सामाजिक सीमांत लागत दोनों लागतों के योग के बराबर है : MSC = MPC + MEC। किसी प्रकार के सामाजिक नियंत्रण के बिना, विद्युत संयंत्र संचालित करने वाले विद्युत उत्पादन तथा प्रदूषण दोनों में वृद्धि करते रहते हैं। उस अवस्था में क्या होगा जब सरकार सीमांत बाह्य लागत के बराबर कोई कर लगा दे? अब MPC + कर = MSC। अधिक विद्युत उत्पादित करने से उत्पादक को प्राप्त होने वाली बचत समाप्त हो जाएगी। इस प्रकार सामाजिक अनुकूलतम स्तर पर विद्युत उत्पादित होने लगेगी।

इससे भिन्न प्रकार की एक अन्य स्थिति पर विचार कीजिए। कतिपय वस्तु या सेवा का

उत्पादन अनुकूलतम स्तर पर नहीं हो रहा है। निजी लागत की गणना उत्पादन को q* स्तर पर सीमित कर रही है जबकि उपभोक्ता अधिक उपभोग q_c करना चाहते हैं। यह हो सकता है यदि $q_c > q_s$ उपभोग अतिरिक्त सामाजिक लाभ पैदा करे, जिसको निजी गणना में शामिल नहीं किया गया है। इसलिए राज्य को ऐसी स्थिति में उत्पादन/वितरण/उपभोग को साहाय्य देनी चहिए (subsidise)। आवश्यक रासायनिक उर्वरकों की बिक्री पर राज्य द्वारा सब्सिडी दी जाती है ताकि यूरिया जैसे उर्वरक की अधिक मात्रा डाल कर खाद्यान्न का उत्पादन अधिक किया जा सके, जो भूख को समाप्त और कुपोषण को दूर करने के लिए आवश्यक है।

17.4.3 प्रत्यक्ष विनियमन : प्रशासनिक उपाय

17.4.3.1 निजी स्तर पर निर्धारित कीमतों का विनियमन

फर्मों द्वारा की जा रही मुनाफाखोरी को रोकने तथा अंतिम उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर वस्तुएँ उपलब्ध कराने के लिए कीमत नियंत्रण एक महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक उपाय हो जाता है। भारत में अपनाए गए दो हाल ही के उपाय हैं : दिल्ली के अनानुदानित निजी विद्यालयों ने अनानुपातिक रूप से विद्यार्थियों से लिए जाने वाले शुल्क में वृद्धि कर दी। ऐसा छठे केंद्रीय वेतन आयोग की संस्तुतिओं के अनुसार वेतन में वृद्धि की बढ़ी लागतों को पूरा करने के नाम पर किया गया। मामला दिल्ली उच्च न्यायालय में ले जाए जाने पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने वसूले गए शुल्क को ब्याज़ सहित वापस करने के निर्देश दिए। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उन संस्थानों पर उनका नियंत्रण भी समाप्त किया जा सकता था।

दूसरा उदाहरण फार्मा कंपनियों द्वारा स्टेंट जैसी चिकित्सीय डिवायस की असाधारण तरीके से ऊँची कीमत वसूल किए जाने का था। सरकार को ऐसी डिवायसों की कीमत निर्धारित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। अनेक आवश्यक दवाओं की अधिकतम कीमत निर्धारित की गयी है। ये उपाय अत्यधिक लाभ को समाप्त करते हुए लागत के ऊपर उचित प्रतिफल सुनिश्चित करते हैं।

17.4.3.2 गतिविधियों का विनियमन

विनियमन : करों एवं साहाय्य के साथ मुख्य समस्या यह है कि करों या साहाय्य का मौद्रिक रूप में व्यक्त किया जा सकने वाला कोई स्तर निर्धारित नहीं किया जा सकता। बाह्यताओं को नियंत्रित करने का एक अन्य तरीका ऐसी गतिविधियों के लिए मानकों की सीमा निर्धारित करने का है। उदाहरणार्थ :

- कार्यस्थलों पर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के न्यूनतम मानकों का निर्धारण
- प्रदूषण परमिट : प्रदूषण उत्पन्न करने वाली गतिविधि की उच्चतम मात्रा निर्धारित करना। इसके ऊपर की सीमा को तोड़ने वाले उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं तथा फर्मों पर कठोर दण्ड लगाना
- सिगरेट के विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाना तथा कार्यस्थलों को धूम्रपान निषेध क्षेत्र घोषित करना।

इसके अतिरिक्त बाह्यता की समस्या का समाधान निकालने के लिए एजेंटों द्वारा निजी स्तर पर सौदेबाजी तथा वार्ताएं भी की जाती हैं।

17.4.4 सार्वजनिक प्रावधान : सार्वजनिक वस्तुओं की आपूर्ति का विस्तार

अब बड़े पैमाने पर यह स्वीकार किया जाने लगा है कि शिक्षा, जनस्वास्थ्य तथा उच्चतर स्तर की चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाओं जैसी आवश्यक सेवाओं का अनुकूलतम प्रावधान सुनिश्चित करने के लिए समाज बाज़ार शक्तियों पर निर्भर नहीं रह सकता।

आपूर्तिकर्ताओं के निजी लागत आकलनों एवं सामाजिक आवश्यकताओं (बृहत् सामाजिक लाभ के महत्त्व वाली) के बीच बड़ा अंतर होने के चलते यह तर्क दिया जाने लगा है कि सरकार को इन क्षेत्रों में बड़े स्तर पर प्रवेश करना चाहिए।

बोध प्रश्न 1

1) पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार की मान्यताएँ क्या हैं?

....

....

....

2) बाज़ार विफलता से आप क्या समझते हैं? बाज़ार विफलता के स्रोतों की विवेचना कीजिए।

....

....

....

3) सार्वजनिक वस्तुओं और निजी वस्तुओं में क्या अंतर है?

....

....

....

4) अदक्ष बाज़ार परिस्थितियों को विनियमित करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप के रूप में उपलब्ध नीतिगत उपायों की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

5) नीचे दी गयी वस्तुओं एवं सेवाओं को दिए गए बॉक्सों में रखिए –

(क) निजी पार्क	(ख) आलू के चिप्स
(ग) मार्ग प्रकाश	(घ) पब्लिक टोल मार्ग एवं पुल
(ङ) पुलिस एवं अग्निशमन सुरक्षा	(च) चारागाह
(छ) समुद्र से पकड़ी गई मछलियाँ	(ज) टिम्बर
(झ) सेना	(ट) केबल टेलीविज़न
(ठ) मोबाइल फोन	(ड) आइसक्रीम
(ढ) पब्लिक रेडियो	(ण) लैपटॉप
(प) सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क मध्याह्न भोजन	(फ) पार्किंग स्थल

तालिका 17.2 : गैर-अपवर्जनीय एवं गैर-प्रतिद्वंद्वी वस्तुएं

		गैर-प्रतिद्वंद्वी	
		हाँ	नहीं
गैर-अपवर्जी	हाँ		
	नहीं		

17.5 सार-संक्षेप

हमने इस इकाई के प्रारंभ में पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यताओं के भंग होने से उपजी परिस्थितियों पर विचार किया। फिर यह प्रदर्शित किया कि ये किस प्रकार निजी एवं सामाजिक लागतों तथा लाभों के बीच विचलन के रूप में परिलक्षित होती हैं। बाह्यताओं के आंतरिकरण की पहल करों एवं साहाय्यों या न्यूनतम/अधिकतम कीमतों के विनियमन या विधिक कानूनों से कतिपय निजी गतिविधियों के विनियमन के रूप में सरकारी हस्तक्षेप का मार्ग प्रशस्त करती है। राज्य के उपकरणों को प्रयुक्त करते हुए कतिपय बाह्यताओं को उस सीमा तक सृजित किया जा सकता है जो पहले से मौजूद बाह्यताओं के प्रतिकूल प्रभावों को समाप्त कर सकें।

17.6 संदर्भ ग्रंथादि

1) Case, Karl E. & Ray C. Fair, *Principles of Economics*, Pearson Education, Inc., 8th edition, 2007., Chapter 12

17.7 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) भाग 17.1 देखें।

2) भाग 17.2 देखें।

3) सार्वजनिक वस्तुओं के दो प्रमुख अभिलक्षण हैं – गैर-अपवर्जनीयता तथा गैर-प्रतिद्वंद्विता। ये दोनों ही कारक उन्हें निजी वस्तुओं से पृथक बनाते हैं।

4) भाग 17.4 देखें।

5) नीचे देखें –

		गैर-प्रतिद्वंद्वी	
		हाँ	नहीं
गैर-अपवर्ती	**हाँ**	सेना, मार्ग प्रकाश, न्यायिक प्रणाली, पुलिस एवं अग्निशमन संरक्षण, निःशुल्क मध्याह्न भोजन	चारागाह, समुद्र से पकड़ी मछलियाँ, टिम्बर
	नहीं	सार्वजनिक टोल रोड एवं पुल केबल टेलीविज़न, सार्वजनिक रेडियो, निजी पार्क	पोटेटो चिप्स, मोबाइल फोन, लैपटॉप, आइसक्रीम, कपड़े, पार्किंग स्थल

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

शब्दावली

अल्पकाल : वह अवधि जिसमें फर्म की कम से कम एक आगत (प्लांट का आकार) स्थिर है।

असामान्य लाभ (Supernormal profit) : जब कोई फर्म दीर्घकाल में संसाधनों को वर्तमान उपयोग में बनाए रखते हुए लाभ अर्जित करती है तो वह असामान्य लाभ होता है इस अवस्था में कीमत > औसत लागत।

अल्पाधिकार : सीमित प्रतिस्पर्धा की स्थिति, जिसके अंतर्गत बाज़ार बड़े उत्पादकों या विक्रेताओं द्वारा आपस में बाँट लिया जाता है।

असाधारण लाभ (Abnormal profit) : सामान्य लाभ से अधिक लाभ – जिसे असामान्य लाभ या एकाधिकारी लाभ भी कहा जाता है। फर्मों के प्रवेश में कठोर बाधाएँ होने के कारण एकाधिकारी फर्म द्वारा दीर्घकाल में अर्जित किया जाने वाला लाभ असाधारण लाभ होता है।

अतिरिक्त क्षमता : अतिरिक्त क्षमता एक ऐसी स्थिति है जहाँ फर्म का वास्तविक उत्पादन उसके द्वारा उत्पादित किए जा सकने वाले उत्पादन (अनुकूलतम/आदर्श उत्पादन) से कम होता है। इसका अर्थ कभी-कभी इससे भी लगाया जाता है कि उत्पाद की वास्तविक माँग उस स्तर से कम है जिसे कि व्यवसाय आपूर्ति करने की क्षमता रखता है।

अंतरण आय : किसी साधन को वर्तमान रोज़गार में रोके रखने के लिए पर्याप्त न्यूनतम भुगतान इसे अन्य सर्वोत्तम रोज़गार में प्राप्त हो सकने वाली आय के रूप में भी व्यक्त किया जाता है।

अपूर्ण प्रतियोगिता : अपूर्ण प्रतियोगिता उस समय उत्पन्न होती है जब किसी बाज़ार में, प्राक्कल्पिक या वास्तविक रूप से नवप्रतिष्ठित विशुद्ध या पूर्ण प्रतियोगिता के किसी अभिलक्षण या तत्व का उल्लघंन किया जाता है।

अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण : अर्थशास्त्र में उत्पादन के अनुकूलतम मिश्रण को उपलब्ध संसाधनों, प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक मूल्यों के साथ उत्पादन के सर्वाधिक वांछित संयोगों के रूप में व्यक्त किया जाता है।

अपूर्ण सूचना : ऐसी स्थिति जब किन्हीं वस्तुओं एवं सेवाओं के बारे में क्रेताओं और विक्रेताओं के पास उपलब्ध सूचना में एकरूपता नहीं होती।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार : दो विभिन्न राष्ट्रों के क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच होने वाला व्यापार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है।

अनुकूलतम स्थिति : वह बिंदु जहां उत्पादन के विभिन्न साधनों का प्रयोग करते हुए उत्पादन के संभावित अधिकतम को प्राप्त किया जाता है।

अनुकूलतम स्थिति भंग : यह वह बिंदु है जहां अनुकूलतम स्थिति भंग हो जाती है, अर्थात् दिए गए संसाधनों से उत्पादन संभावित अधिकतम से कम हो जाता है।

अंतर्निहित लागतें : अंतर्निहित लागतें वे लागतें हैं जो फर्म के स्वयं के स्वामित्व वाले संसाधनों के प्रयोग से संबंधित हैं। क्योंकि ये साधन यदि किसी अन्य उत्पादन में प्रयोग किए जाएं तो ये संसाधन प्रतिफल प्रदान करते हैं। अतः इनका आरोपित मूल्य अंतर्निहित लागत का गठन करता है।

आर्थिक लाभ : फर्म के आगम में से आर्थिक लागत को घटाकर प्राप्त धनराशि।

आर्थिक लागत : आर्थिक लागत में लेखांकन लागत के साथ उत्पत्ति के साधन के अगले सर्वोत्तम विकल्प में प्राप्त प्रतिफल के समतुल्य अवसर लागत को शामिल किया जाता है।

आर्थिक लगान : किसी आगत के स्वामी को प्राप्त वह अतिरेक जो उसे आगत को किसी फर्म को प्रदान करने के लिए न्यूनतम धनराशि से ऊपर प्राप्त होता है।

आय प्रभाव : उपभोक्ता की वास्तविक आय में परिवर्तन द्वारा प्रेरित वस्तु या सेवा की मांग में परिवर्तन है।

कीमत में कोई भी वृद्धि या कमी के अनुरूप/परिणामस्वरूप उपभोक्ता की वास्तविक आय में कमी होती है या वृद्धि होती है जिसके परिणामस्वरूप उसी वस्तु या अन्य वस्तु के या सेवा के लिए मांग कम या अधिक होती है।

आय की असमानताएं : किसी अर्थव्यवस्था में विभिन्न आय वर्गों के बीच आय का वितरण।

आपूर्ति में वृद्धि : किसी वस्तु की दी हुई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जाना।

आपूर्ति अनुसूची : दो कॉलम वाली तालिका जो विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की मात्रा को प्रदर्शित करती हैं।

आपूर्ति वक्र : अन्य बातें समान रहने पर एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की मात्राओं के संबंध को प्रदर्शित करने वाला वक्र।

आगमनात्मक तर्कशैली : ऐसी विश्लेषण पद्धति जिसमें तथ्याधारित जानकारी का प्रयोग कर विभिन्न शक्तियों/संप्रेरणाओं के प्रति आर्थिक इकाइयों के व्यवहार के सांझे सूत्रों की पहचान होती है।

आपूर्ति : वस्तु की वह मात्रा जो उसकी किसी कीमत विशेष पर प्रत्येक समयावधि में बेचने के लिए विक्रेता तत्पर होते हैं।

आवश्यक वस्तुएँ : जीवन धारण की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने वाली वस्तुएँ।

आर्थिक नियम : प्रवृत्तियों विषयक कथन। ये विभिन्न शक्तियों/संप्रेरणाओं के फलस्वरूप अधिक अभिकर्ताओं की मानक या सामान्य प्रतिक्रियाएँ बताते हैं।

आर्थिक लागत : आर्थिक लागत से अभिप्राय फर्म द्वारा उत्पादन में आर्थिक संसाधनों के उपयोग की लागत से है जिसमें अवसर लागत भी शामिल है।

आंतरिक मितव्ययताएं : वे मितव्ययताएं जो फर्म को अपने आकार का विस्तार करने पर प्राप्त होती हैं उन्हें आंतरिक मितव्ययताओं के तौर पर जाना जाता है।

आंतरिक अपमितव्ययताएं : जब उत्पादन के पैमाने में लगातार विस्तार किया जाता है, फर्में एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाती हैं जहां उत्पादन में वृद्धि, उत्पादन के साधनों में वृद्धि की तुलना में कम होती है। इस बिंदु पर आंतरिक अपमितव्ययताएं लागू हो जाती हैं ।

आयताकार परवलय : ऐसा वक्र जिसके किसी भी बिंदु से उसके नीचे बनाए गए आयतों के क्षेत्रफल एकसमान हों।

आपूर्ति में कमी : किसी वस्तु की दी हुई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति में कमी आ जाना।

आपूर्ति की लोच : कीमत परिवर्तन के प्रति आपूर्ति की मात्रा की संवेदनशीलता।

आपूर्ति का विस्तार : किसी वस्तु की पूर्ति में वृद्धि के फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि।

आवंटनात्मक दक्षता (Allocative efficiency) : उपभोक्ताओं की माँग पर वस्तुओं/सेवाओं का उत्पादन उस कीमत पर करना जो पूर्ति की सीमांत लागत को दर्शाती है।

आवंटनात्मक दक्षता : आवंटनात्मक दक्षता किसी अर्थव्यवस्था के लिए वह अवस्था है जहाँ उत्पादन उपभोक्ता प्राथमिकताओं को इस प्रकार व्यक्त करता है कि प्रत्येक वस्तु एवं सेवा का उत्पादन उस बिंदु या स्तर तक किया जाता है जहाँ अंतिम इकाई उपभोक्ताओं को जो सीमांत लाभ प्रदान करती है वह उत्पादन की सीमांत लागत के बराबर होता है। एकल कीमत मॉडल में आवंटनात्मक दक्षता के बिंदु पर वस्तु अथवा सेवा की कीमत उसकी सीमांत लागत के बराबर होती है।

आभासी लगान : किसी साधन की औसत लागत से ऊपर उत्पत्ति के किसी साधन को प्राप्त होने वाली आय। यह एक अल्पकालीन अवधारणा है।

उत्पाद विभेद : सामान्य तौर पर एक-दूसरे से मिलती-जुलती लेकिन किसी न किसी आधार पर भिन्नता रखने वाली वस्तुओं की बिक्री। उपभोक्ताओं को इन्हीं में से अपनी पसंद तय करनी होती है।

उत्पादक दक्षता : उत्पादक दक्षता एक ऐसा आर्थिक स्तर है जहाँ अर्थव्यवस्था में किसी अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी लाए बिना किसी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती। यह स्थिति उसी अवस्था में उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था उत्पादन संभावना सीमा पर होती है।

उत्पादन संभावना वक्र : किसी अर्थव्यवस्था में दो वस्तुओं/सेवाओं के उन संयोजनों को व्यक्त करने वाला वक्र जिन्हें समाज अपने संसाधनों के दक्षतापूर्ण प्रयोग करते हुए उत्पादित कर सकता है।

उत्पादन फलन : वह तकनीकी नियम जो, साधन आगतों तथ निर्गत के बीच संबंध को व्यक्त करता है, उत्पादन फलन कहलाता है।

उपभोक्ता संतुलन : वह बिंदु जिस पर एक उपभोक्ता दी गई आय तथा कीमतों के प्रतिबंधों के अंतर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद से अनुकूलतम उपयोगिता या संतुष्टि पर पहुँचता है।

उपभोग : किसी आवश्यकता की संतुष्टि की प्रक्रिया में वस्तुओं में अंतर्निहित उपयोगिता का प्रयोग।

उपयोगिता : वस्तुओं की आवश्यकताएँ पूर्ण कर पाने की क्षमता। यह उपभोक्ता को किसी चीज़ से मिली संतुष्टि या सेवा ही है।

एकाधिकार : वस्तु के कोई निकट स्थानापन्न नहीं होने की दशा में किसी वस्तु का एकमात्र उत्पादक (विक्रेता) होना।

एकाधिकारिक प्रतियोगिता : अनेक फर्में एक-दूसरे से मिलता-जुलता लेकिन विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन करती हैं जो एक-दूसरे के निकट स्थानापन्न होते हैं। दूसरे शब्दों में, अधिक संख्या में विक्रेता फर्म लगभग एक जैसी (लेकिन एकसमान नहीं), वस्तुएँ बेचती हैं तथा कीमत और अन्य कारकों में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करती हैं।

सीमांत आगम उत्पाद (एम.आर.पी.) : सीमांत आगम उत्पाद अर्थात् सीमांत आगम एवं साधन के सीमांत उत्पाद का गुणनफल।

एकाधिकारी : किसी वस्तु की संपूर्ण आपूर्ति पर नियंत्रण रखने वाला उत्पादक।

ऐतिहासिक लागत : ऐतिहासिक लागत वह लागत है जो संपत्ति को क्रय करते समय वास्तव में व्यय हो चुकी है।

औसत उत्पाद : जब कुल उत्पाद को प्रयोग की गई आगत की इकाइयों की संख्या से भाग किया जाता है वह औसत उत्पाद है।

कटक (रिज) रेखाएं : उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करने वाली रेखाओं को कटक (रिज) रेखाओं के रूप में जाना जाता है।

कीमत विभेद (Price discrimination) : जब कोई फर्म लागत से कोई संबंध न होते हुए भी उत्पादित वस्तु अथवा सेवा की अलग-अलग क्रेताओं से अलग-अलग कीमत वसूलती है तो उसे कीमत विभेद की संज्ञा दी जाती है।

कैदी की दुविधा : द्यूत सिद्धांत में एक ऐसी स्थिति जिसमें दो खिलाड़ियों के पास केवल दो ही विकल्प होते हैं जिनका परिणाम एक

दूसरे द्वारा एक साथ लिए गए निर्णयों पर निर्भर करता है। इसे प्रायः दो कैदियों द्वारा अपराध को स्वीकार कर लेने या न करने के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कूर्नो प्रतिमान : अल्पाधिकार का कूर्नो प्रतिमान इस मान्यता पर आधारित है कि दो प्रतिस्पर्धी फर्में एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं तथा यह निर्धारित कर कि कितना उत्पादन करना है अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करती हैं। सभी फर्में अपने द्वारा किए जाने वाले उत्पादन की मात्रा का निर्धारण एक साथ करती हैं।

कीमत अनुपात या सापेक्षिक कीमत : किसी वस्तु की कीमत जो किसी अन्य वस्तु की कीमत के सापेक्ष व्यक्त की जाती है। सापेक्षिक कीमत को प्रायः दो कीमतों के अनुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कीमत सीमा : सरकार द्वारा किसी वस्तु या सेवा की अधिकतम सीमा निर्धारित कर देना।

कीमत प्रभाव : बाज़ार में उत्पाद या सेवा के लिए उपभोक्ता की मांग पर इसकी कीमत में परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। किसी वस्तु की कीमत पर किसी घटना के प्रभाव को भी कीमत प्रभाव कह सकते हैं। कीमत प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव तथा आय प्रभाव का एक परिणामी प्रभाव है।

कुल उपयोगिता : किसी वस्तु की सभी उपभोग की गई इकाइयों से मिली उपयोगिता का योगफल।

गणनावाचक उपयोगिता : गणनावाचक उपयोगिता दृष्टिकोण नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने प्रतिपादित किया था, जिन्हें विश्वास था कि उपयोगिता मापनीय है तथा ग्राहक गणनात्मक या मात्रात्मक अंक जैसे 1, 2, 3 इत्यादि में अपनी संतुष्टि को व्यक्त कर सकता है।

गैर-सहयोगात्मक व्यवहार: अल्पाधिकार को सर्वोत्तम रूप में बाज़ार के भीतर उसके वास्तविक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है। सकेंद्रीकरण अनुपात उस स्तर या सीमा का माप करता है जहाँ तक बाज़ार की कुछ फर्मों के बीच कोई एक फर्म प्रभुत्व रखती है। यह फर्में जब आपस में मिलकर कार्य करने के लिए समझौता कर लेती हैं तो उसे अल्पाधिकारी बाज़ार में सहयोगात्मक व्यवहार के रूप में जाना जाता है।

गैर-अपवर्जनीयता : भुगतान न करने वाले किसी भी उपभोक्ता को उपयोग करने से वंचित न किए जाने की स्थिति।

गैर-प्रतिद्वंद्वी : जब किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु का उपभोग किए जाने से किसी अन्य के हिस्से में कोई कमी नहीं होती।

गुणवाची अर्थशास्त्र : क्या वांछनीय है और वर्तमान दशाओं में कैसे परिवर्तनों द्वारा उसे पाया जा सकता है? इस प्रकार के प्रश्नों का अध्ययन करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

गिफ्फन वस्तु : ऐसी वस्तुएं जिनकी कीमत और मांग की मात्रा के बीच सीधा संबंध होता है।

घटते प्रतिफल के नियम : जब एक आगत की अधिक इकाइयों का अन्य आगत की स्थिर मात्रा के साथ प्रयोग किया जाता है, परिवर्ती आगत का सीमांत उत्पाद एक बिंदु के पश्चात् घटता है।

डूबत लागत : डूबत लागत वह लागत है जो व्यय की जा चुकी है तथा जिसे वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता।

तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर : प्रतिस्थापन की दर या प्रतिस्थापन की सीमांत दर वह दर है जहाँ किसी अन्य वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन (सीमांत इकाई) करने के लिए किसी वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करना पड़ता है। यह मानकर चला जाता है कि दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए एक जैसे दुर्लभ आगतों का प्रयोग किया जाता है। रूपांतरण की सीमांत दर उत्पादन संभावना सीमा (PPF) से संबद्ध है जो समान संसाधनों को प्रयुक्त करते हुए दो वस्तुओं के संभाव्य उत्पादन को व्यक्त करता है।

तुलनात्मक लाभ : किसी देश A को वस्तु x के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्राप्त है यदि घरेलू स्तर पर उसकी लागत किसी अन्य देश में उसी वस्तु की लागत की तुलना में कम है।

दीर्घकाल : वह अवधि जिसमें प्लांट की क्षमता सहित सभी आगतें परिवर्तनशील हैं।

न्यूनतम मज़दूरी अधिनियम : सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के रोज़गारों के लिए निर्धारित न्यूनतम मज़दूरी से संबंधित कानून।

निःशुल्क सवारी : किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु या सेवा का मूल्य चुकाए बिना उसका उपयोग करना।

नैतिक द्वंद्व : किसी दूसरे पक्ष से जानबूझ कर कुछ सूचना का छुपाया जाना।

नति परिवर्तन बिंदु (Inflexion point) : वह बिंदु जहां कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ना बंद करता है तथा घटती दर से बढ़ना आरंभ करता है नति परिवर्तन बिंदु कहलाता है।

निर्भर चर : ऐसा चर जिसका मान किसी स्वतंत्र चर में परिवर्तन के साथ ही बदलता हो।

निकृष्ट पदार्थ : ऐसी वस्तुएँ जिनकी मांग की मात्रा और उपभोक्ता की आय में विलोम संबंध होता है।

निजी पदार्थ : ऐसे पदार्थ जिनका उपभोग चुने हुए प्रयोक्ताओं तक सीमित रखा जा सके। इस तरह से इनका स्वरूप विभाजनीय हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार : एक बाज़ार पूर्ण प्रतियोगिता वाला बाज़ार है यदि इससे अनेक उपभोक्ता एवं अनेक फर्में हैं, किसी के पास भी बाज़ार का कोई बड़ा हिस्सा नहीं है, सभी फर्में एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं, बाज़ार में प्रवेश करने तथा बाज़ार से बाहर निकलने में कोई बाधा नहीं है तथा उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं को बाज़ार की पूरी जानकारी है।

पॉल स्वीज़ी का कोनेदार मांग वक्र : कोनेदार माँग वक्र का सिद्धांत अल्पाधिकार एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता का एक आर्थिक सिद्धांत है।

प्रतिकूल चयन : जब असमान सूचना के चलते किसी सौदे का एक पक्ष को अर्द्ध अनुकूलतम चयन करना पड़ता है।

पदार्थ : ऐसी चीज़ें जिनमें उपयोगिता हो अथवा जिसका अन्य वस्तुओं/सेवाओं के उत्पादन में प्रयोग हो सके।

पैमाने के स्थिर प्रतिफल : पैमाने के स्थिर प्रतिफल से तात्पर्य है कि जब सभी आगतों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है, तब उत्पादन भी समान अनुपात में बढ़ता है ।

पैमाने के घटते प्रतिफल : पैमाने के घटते प्रतिफल का संदर्भ उस स्थिति से है जब उत्पाद आगतों की तुलना में कम अनुपात में बढ़ता है।

पैमाने के बढ़ते प्रतिफल : पैमाने के बढ़ते प्रतिफल से अभिप्राय उस स्थिति से है जब उत्पाद आगतों की तुलना में अधिक अनुपात में बढ़ता है।

प्रतिस्थापक वस्तु : वह वस्तु जिसकी मांग का किसी वस्तु की मांग के साथ विलोम संबंध हो।

पूर्ति का संकुचन : कीमत में कमी के कारण आपूर्ति की मात्रा में आयी कमी।

प्रतिस्थापन प्रभाव : कीमत में वृद्धि के कारण मांग में आया वह प्रभाव जो एक उपभोक्ता को एक सापेक्षिक रूप से कम कीमत वाली वस्तु की उच्च कीमत वाली से अधिक खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

प्रतिस्थापन लागत : प्रतिस्थापन लागत वह लागत है जो संपत्ति का पुनर्स्थापन करने पर व्यय होगा (प्रतिस्थापन लागत समान प्रकार की नई संपत्ति की वर्तमान लागत होती है)।

प्रतिस्थापन प्रभाव : अन्य कीमतें स्थिर रहने पर एक वस्तु की कीमत के वह प्रभाव जो अन्य वस्तुओं के स्थान पर इस वस्तु की मांग में आए परिवर्तन को दिखाते हैं।

प्रयोग मूल्य : वस्तुओं की उपयोगिता।

प्रवाह चर : ऐसा चर जिसे किसी अवधि के अनुसार ही अभिव्यक्त किया जाता है।

ब्याज : पूँजी के उपयोग हेतु भुगतान की जाने वाली धनराशि ब्याज ही ब्याज वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त की जाने वाली मानव निर्मित वस्तुओं (मशीनों) के लिए भुगतान किया जाता है।

बाह्यताएँ : किसी अर्थव्यवस्था में बाह्यताएँ उस समय उत्पन्न होती हैं जब उत्पादन या उपभोग किसी ऐसे तीसरे पक्ष को प्रभावित करता है जिसका ऐसे उत्पादन या उपभोग से कोई संबंध नहीं होता।

बाह्य मितव्ययताएं : जब एक फर्म उत्पादन आरंभ करती है, उसे अनेक ऐसी मितव्ययताएं प्राप्त होती हैं जिसके लिए उसकी स्वयं की रणनीति या योजनाएं जिम्मेदार नहीं होतीं। ये सभी फर्मों की बाह्य मितव्ययताएं कहलाती हैं ।

बाह्य अपमितव्ययताएं	:	जब उत्पादन के पैमाने में विस्तार किया जाता है, तब अनेक ऐसी अपमितव्ययताएं भी उत्पन्न होती हैं जिनका स्वयं फर्म पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता किंतु इनका भार अन्य फर्मों को सहन करना पड़ता है। इन्हें बाह्य अमितव्ययताओं के तौर पर जाना जाता है ।
बजट रेखा	:	बजट रेखा, जिसे बजट प्रतिबंध भी कहा जाता है दो वस्तुओं के उन सभी संयोजनों को दर्शाता है जिन्हें एक उपभोक्ता बाज़ार कीमतों के दिए हुए होने पर तथा विशिष्ट आय स्तर के अंतर्गत खरीद सकता है।
बाज़ार अपूर्णताएँ	:	बाज़ार की ऐसी दशाएं जो पूर्ण प्रतियोगिता के अनुरूप नहीं हैं।
बाज़ार विफलताएँ	:	अर्थव्यवस्था में संसाधनों के दक्ष आवंटन को प्राप्त करने में लिए बाज़ार तंत्र की विफलता।
मज़दूरी	:	तकनीकी विशेषज्ञता और शारीरिक श्रम के द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु किए गए मानव प्रयास के रूप में श्रमिक को भुगतान किए जाने वाले पारितोषक को मज़दूरी कहते हैं।
माँग	:	नियत इकाई कीमत पर किसी वस्तु/सेवा की जितनी इकाइयाँ हमारा उपभोक्ता प्रति समयावधि खरीदने को तत्पर हो।
मांग की आय लोच	:	उपभोक्ता की आय में आनुपातिक परिवर्तन के प्रति उपभोक्ता की मांग की संवेदनशीलता।
माँग में परिवर्तन	:	पूरे माँग वक्र का विवर्तन या खिसकाव।
माँग की मात्रा में परिवर्तन	:	वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण मांग वक्र के एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक चलना।
मौद्रिक विनिमय	:	मुद्रा के बदले किसी वस्तु/सेवा की बिक्री।
यथार्थवादी या सकारात्मक अर्थशास्त्र	:	किसी यथास्थिति की वांछनीयता पर टिप्पणी किए बिना और उसमें परिवर्तन के सुझाव दिए बिना उसका निरूपण करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।
लगान	:	भूमि के उपयोग हेतु किए जाने वाले भुगतान को लगान कहते हैं। उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त किए जाने वाले समस्त प्राकृतिक संसाधन भूमि के अंतर्गत आते हैं।
लाभ	:	उत्पादन प्रक्रिया में अपने संगठन एवं कौशल के उपयोग तथा जोखिम वहन करने के लिए उद्यमी को प्राप्त होने वाला पारितोषक लाभ है।
लेखांकन लागत	:	लेखांकन लागत से अभिप्राय फर्म के वास्तविक व्यय तथा पूँजीगत उपकरणों के मूल्यह्रास व्यय से है।
व्यापार संगुट	:	प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित रखकर कीमतों को ऊँचा रखने के उद्देश्य से विनिर्माताओं या आपूर्तिकर्ताओं का संघ।

व्युत्पन्न माँग : उत्पत्ति के साधनों की माँग इसलिए की जाती है क्योंकि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग की जाती है। इसलिए साधनों की माँग व्युत्पन्न माँग है।

वी.एम.पी. : सीमांत उत्पाद का मूल्य अर्थात् कीमत एवं साधन के सीमांत उत्पाद का गुणनफल।

वाणिज्यवाद : व्यापार का यह सिद्धांत बताता है कि देश को निर्यातों को बढ़ावा देना चाहिए तथा आयातों को हतोत्साहित करना चाहिए। वाणिज्यवादियों का तर्क था कि राष्ट्र अपने निर्यातों में वृद्धि करके तथा आयातों में कमी लाकर ही बहुमूल्य धातुओं (सोना) के रूप में अधिकाधिक संपत्ति संचित कर सकता है।

विकुंचित वक्र (Non-linear Curve) : वह आपूर्ति वक्र जो एक सीधी रेखा न हो।

विशेष गुण पदार्थ (Merit Goods) : ऐसी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनका उपभोग उनके उपभोक्ता ही नहीं पूरे समाज को भी लाभान्वित करता है।

विलासिताएँ : ऐसी वस्तुएं जो सामाजिक मान-प्रतिष्ठा के लिए ही प्रयोग की जाती हैं।

वस्तु विनियम : वस्तुओं/सेवाओं के बदले वस्तुएँ/सेवाओं का ही क्रय-विक्रय या विनिमय।

विनियम मूल्य : किसी वस्तु की बाज़ार में प्रचलित कीमत।

व्यष्टि अर्थशास्त्र : व्यक्ति स्तरीय आर्थिक इकाइयों या उनके समूहों अथवा वस्तु स्तर पर कीमत आदि चरों का अध्ययन करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

वृद्धिशील लागत : उत्पादन में एक वृद्धि होने के परिणामस्वरूप कुल लागत में होने वाली वृद्धि वृद्धिशील लागत होती है।

रेखीय समरूप उत्पादन फलन : जब उत्पाद में समान अनुपात में वृद्धि होती है जिसमें आगतों में वृद्धि हुई है, उत्पादन फलन रेखीय समरूप है। उदाहरणार्थ, यदि श्रम तथा पूँजी में λ गुणा की वृद्धि हुई है, परिणामस्वरूप, उत्पाद में भी λ गुणा वृद्धि होती है, तब उत्पादन फलन रेखीय समरूप है।

सामान्य लाभ : सामान्य लाभ एक ऐसी आर्थिक दशा है जो उस समय उत्पन्न होती है जबकि फर्म के कुल आगम एवं कुल लागत के बीच का अंतर शून्य होता है। सरल शब्दों में, किसी फर्म को बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए आवश्यक लाभ ही सामान्य लाभ है।

सहयोगात्मक व्यवहार : सहयोगात्मक अल्पाधिकार के अंतर्गत कुछ ही उत्पादक होते हैं जो संसाधनों का आवंटन आपस में करने तथा उत्पादन की कीमत निर्धारित करने के लिए आपस में सहयोग करते हैं। व्यापार संगुट, सहयोगात्मक अल्पाधिकार का एक उदाहरण है।

स्टैकिलबर्ग प्रतिमान : स्टैकलबर्ग प्रतिमान अर्थशास्त्र में एक रणनीतिक द्यूत है जिसमें नेतृत्व करने वाली फर्में पहले चाल चलती हैं

अर्थात् निर्णय लेती हैं जिसके क्रम में अन्य फर्में निर्णय लेती हैं। स्टैकलबर्ग संतुलन बनाए रखने में आगे बाधाएं आती हैं।

सीमांत (भौतिक उत्पाद) : उत्पत्ति के अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए किसी एक साधन की एक अतिरिक्त इकाई को काम पर लगाने से उत्पादित मात्रा में हुआ परिवर्तन।

सीमांत आगम उत्पाद : सीमांत भौतिक उत्पाद में सीमांत आगम से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल।

संसाधनों का दक्ष आवंटन : आगतों, उत्पादन और उत्पादन का ऐसा वितरण जो अर्थव्यवस्था में किसी परिवर्तन से किसी भी व्यक्ति को खराब स्थिति में पहुँचाएं बिना किसी अन्य व्यक्ति को बेहतर स्थिति में न पहुँचा पाए (समभाव वक्र चित्र द्वारा मापित)।

समभाव वक्र या उपयोगिता सीमा : एक समभाव वक्र दो आर्थिक वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को इंगित करता है जिन पर उपभोक्ता का व्यवहार समभावपूर्ण रहता है, भले ही वह कोई भी संयोग चुन ले।

समोत्पाद वक्र : समोत्पाद वक्र एक ऐसा ग्राफ है जिस पर स्थित प्रत्येक बिंदु पर सभी आगतों के संयोग वस्तु की एकसमान मात्रा उत्पादित करते हैं।

सीमांत प्रतिस्थापन दर : प्रतिस्थापन की सीमांत दर ऐसी दर है जिस पर कोई उपभोक्ता किसी एक वस्तु की मात्रा को किसी दूसरी वस्तु की मात्रा से प्रतिस्थापित करने के लिए तैयार है, उस सीमा तक जब तक कि ऐसा करने से उसकी संतुष्टि का स्तर एक समान रहे। इसे समभाव वक्र सिद्धांत में उपभोक्ता के व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

सार्वजनिक वस्तुएँ : ऐसी वस्तुएँ एवं सेवाएँ जिनके उपयोग से किसी भी व्यक्ति को वंचित नहीं किया जा सकता एवं किसी एक व्यक्ति द्वारा ऐसी वस्तुओं/सेवाओं का उपयोग किए जाने से इन्हीं वस्तुओं/सेवाओं के उपयोग में किसी अन्य व्यक्ति के लिए कोई कमी नहीं आती।

सार्वजनिक हस्तक्षेप : वस्तुओं, सेवाओं एवं अन्य कारकों के लिए बाज़ार में सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्य।

सार्वजनिक प्रावधान : सरकारी अधिकारियों/निकायों द्वारा सामाजिक दृष्टि से वांछित एवं महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ एवं सेवाएँ अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुँचाना।

सामूहिक संसाधन : जहाँ किसी संसाधन का कोई स्वामी नहीं होता लेकिन जिनके प्रयुक्तकर्ता अनेक होते हैं।

साधन संपन्नता : किसी देश के पास भूमि, श्रम और पूँजी आदि जैसे साधनों की उपलब्धता।

सार्वजनिक पदार्थ : ऐसी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनकी सुलभता को कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इनके

हितलाभ अविभाज्य होते हैं– किसी व्यक्ति को उनसे लाभान्वित होने से वंचित या बहिष्कृत नहीं रखा जा सकता।

सुविधाएँ : ऐसे पदार्थ की चर्चा हमारी उत्पादन क्षमता और सुख-सुविधा से वर्धित करने में सहायक हों।

समष्टि अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की वह प्रशाखा जिसमें समूचे अर्थतंत्र या उसके एक बहुत बड़े प्रखंड का अध्ययन होता है।

सीमांत इकाई : विचारगत चर की अंतिम इकाई का मान।

सीमांत उपयोगिता : यह उपभोक्ता द्वारा एक इकाई अधिक उपभोग करने पर उसे प्राप्त उपयोगिता है। यह एक महत्त्वपूर्ण संकल्पना है, अर्थशास्त्री इसी को प्रयोग कर यह आकलन करते हैं कि कोई उपभोक्ता किसी वस्तु की कितनी इकाइयाँ खरीदने को तैयार होगा।

स्टॉक (या भंडार) चर : ऐसा चर जिसका परिमाण किसी समय बिंदु पर ही मापा जाता है।

संपूरक पदार्थ : ऐसी वस्तु जिसकी मांग का किसी वस्तु के उपभोग के साथ सीधा संबंध हो।

समलागत रेखा : एक समलागत रेखा, आगतों के विभिन्न संयोगों को दर्शाती है जो एक दी गई व्यय राशि से क्रय की जा सकती है।

सम-उत्पाद वक्र : एक सम-उत्पाद वक्र उत्पादन के दो साधनों के सभी संयोगों का ज्यामातीय प्रस्तुतीकरण है जो उत्पाद का समान स्तर प्राप्त करता है।

सीमांत तकनीकी प्रतिस्थान दर ($MRTS_{L,K}$) : साधन श्रम (L) के लिए साधन पूँजी (K) की सीमांत तकनीकी प्रतिस्थापन की दर पूँजी (K) की वह मात्रा में कमी है, जो कि श्रम (L) की मात्रा में एक इकाई की वृद्धि करने पर उत्पाद स्तर को अपरिवर्तित रखने के लिए की जाती है।

स्पष्ट लागत : स्पष्ट लागतें एक फर्म तथा अन्य पक्षों के बीच होने वाले लेन-देन के कारण उत्पन्न होती हैं जिसमें फर्म उत्पादन करने के लिए आदतों या सेवाओं का क्रय करती है।

श्रम संघ : अपने अधिकारों के संरक्षण हेतु श्रमिकों का एक मान्यता प्राप्त संगठन।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) Kautsoyiannis, A. (1979), *Modern Micro Economics*, London: Macmillan.

2) Lipsey, RG (1979), *An Introduction to Positive Economics*, English Language Book Society.

3) Pindyck, Robert S. and Daniel Rubinfield, and Prem L. Mehta (2006), *Micro Economics*, An imprint of Pearson Education.

4) Case, Karl E. and Ray C. Fair (2015), *Principles of Economics*, Pearson Education, New Delhi.

5) Stiglitz, J.E. and Carl E. Walsh (2014), *Economics*, viva Books, New Delhi.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

शब्दावली

अल्पकाल	:	वह अवधि जिसमें फर्म की कम से कम एक आगत (प्लांट का आकार) स्थिर है।
असामान्य लाभ (Supernormal profit)	:	जब कोई फर्म दीर्घकाल में संसाधनों को वर्तमान उपयोग में बनाए रखते हुए लाभ अर्जित करती है तो वह असामान्य लाभ होता है इस अवस्था में कीमत > औसत लागत।
अल्पाधिकार	:	सीमित प्रतिस्पर्धा की स्थिति, जिसके अंतर्गत बाज़ार बड़े उत्पादकों या विक्रेताओं द्वारा आपस में बाँट लिया जाता है।
असाधारण लाभ (Abnormal profit)	:	सामान्य लाभ से अधिक लाभ – जिसे असामान्य लाभ या एकाधिकारी लाभ भी कहा जाता है। फर्मों के प्रवेश में कठोर बाधाएँ होने के कारण एकाधिकारी फर्म द्वारा दीर्घकाल में अर्जित किया जाने वाला लाभ असाधारण लाभ होता है।
अतिरिक्त क्षमता	:	अतिरिक्त क्षमता एक ऐसी स्थिति है जहाँ फर्म का वास्तविक उत्पादन उसके द्वारा उत्पादित किए जा सकने वाले उत्पादन (अनुकूलतम/आदर्श उत्पादन) से कम होता है। इसका अर्थ कभी-कभी इससे भी लगाया जाता है कि उत्पाद की वास्तविक माँग उस स्तर से कम है जिसे कि व्यवसाय आपूर्ति करने की क्षमता रखता है।
अंतरण आय	:	किसी साधन को वर्तमान रोज़गार में रोके रखने के लिए पर्याप्त न्यूनतम भुगतान इसे अन्य सर्वोत्तम रोज़गार में प्राप्त हो सकने वाली आय के रूप में भी व्यक्त किया जाता है।
अपूर्ण प्रतियोगिता	:	अपूर्ण प्रतियोगिता उस समय उत्पन्न होती है जब किसी बाज़ार में, प्राक्कल्पिक या वास्तविक रूप से नवप्रतिष्ठित विशुद्ध या पूर्ण प्रतियोगिता के किसी अभिलक्षण या तत्व का उल्लघंन किया जाता है।
अनुकूलतम उत्पाद मिश्रण	:	अर्थशास्त्र में उत्पादन के अनुकूलतम मिश्रण को उपलब्ध संसाधनों, प्रौद्योगिकी एवं सामाजिक मूल्यों के साथ उत्पादन के सर्वाधिक वांछित संयोगों के रूप में व्यक्त किया जाता है।
अपूर्ण सूचना	:	ऐसी स्थिति जब किन्हीं वस्तुओं एवं सेवाओं के बारे में क्रेताओं और विक्रेताओं के पास उपलब्ध सूचना में एकरूपता नहीं होती।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार	:	दो विभिन्न राष्ट्रों के क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच होने वाला व्यापार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है।
अनुकूलतम स्थिति	:	वह बिंदु जहां उत्पादन के विभिन्न साधनों का प्रयोग करते हुए उत्पादन के संभावित अधिकतम को प्राप्त किया जाता है।

अनुकूलतम स्थिति भंग : यह वह बिंदु है जहां अनुकूलतम स्थिति भंग हो जाती है, अर्थात् दिए गए संसाधनों से उत्पादन संभावित अधिकतम से कम हो जाता है।

अंतर्निहित लागतें : अंतर्निहित लागतें वे लागतें हैं जो फर्म के स्वयं के स्वामित्व वाले संसाधनों के प्रयोग से संबंधित हैं। क्योंकि ये साधन यदि किसी अन्य उत्पादन में प्रयोग किए जाएं तो ये संसाधन प्रतिफल प्रदान करते हैं। अतः इनका आरोपित मूल्य अंतर्निहित लागत का गठन करता है।

आर्थिक लाभ : फर्म के आगम में से आर्थिक लागत को घटाकर प्राप्त धनराशि।

आर्थिक लागत : आर्थिक लागत में लेखांकन लागत के साथ उत्पत्ति के साधन के अगले सर्वोत्तम विकल्प में प्राप्त प्रतिफल के समतुल्य अवसर लागत को शामिल किया जाता है।

आर्थिक लगान : किसी आगत के स्वामी को प्राप्त वह अतिरेक जो उसे आगत को किसी फर्म को प्रदान करने के लिए न्यूनतम धनराशि से ऊपर प्राप्त होता है।

आय प्रभाव : उपभोक्ता की वास्तविक आय में परिवर्तन द्वारा प्रेरित वस्तु या सेवा की मांग में परिवर्तन है।

कीमत में कोई भी वृद्धि या कमी के अनुरूप/परिणामस्वरूप उपभोक्ता की वास्तविक आय में कमी होती है या वृद्धि होती है जिसके परिणामस्वरूप उसी वस्तु या अन्य वस्तु के या सेवा के लिए मांग कम या अधिक होती है।

आय की असमानताएं : किसी अर्थव्यवस्था में विभिन्न आय वर्गों के बीच आय का वितरण।

आपूर्ति में वृद्धि : किसी वस्तु की दी हुई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि हो जाना।

आपूर्ति अनुसूची : दो कॉलम वाली तालिका जो विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की मात्रा को प्रदर्शित करती हैं।

आपूर्ति वक्र : अन्य बातें समान रहने पर एक निश्चित समयावधि में वस्तु की विभिन्न कीमतों पर आपूर्ति की मात्राओं के संबंध को प्रदर्शित करने वाला वक्र।

आगमनात्मक तर्कशैली : ऐसी विश्लेषण पद्धति जिसमें तथ्याधारित जानकारी का प्रयोग कर विभिन्न शक्तियों/संप्रेरणाओं के प्रति आर्थिक इकाइयों के व्यवहार के सांझे सूत्रों की पहचान होती है।

आपूर्ति : वस्तु की वह मात्रा जो उसकी किसी कीमत विशेष पर प्रत्येक समयावधि में बेचने के लिए विक्रेता तत्पर होते हैं।

आवश्यक वस्तुएँ : जीवन धारण की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने वाली वस्तुएँ।

आर्थिक नियम : प्रवृत्तियों विषयक कथन। ये विभिन्न शक्तियों/संप्रेरणाओं के फलस्वरूप अधिक अभिकर्ताओं की मानक या सामान्य प्रतिक्रियाएँ बताते हैं।

आर्थिक लागत : आर्थिक लागत से अभिप्राय फर्म द्वारा उत्पादन में आर्थिक संसाधनों के उपयोग की लागत से है जिसमें अवसर लागत भी शामिल है।

आंतरिक मितव्ययताएं : वे मितव्ययताएं जो फर्म को अपने आकार का विस्तार करने पर प्राप्त होती हैं उन्हें आंतरिक मितव्ययताओं के तौर पर जाना जाता है।

आंतरिक अपमितव्ययताएं : जब उत्पादन के पैमाने में लगातार विस्तार किया जाता है, फर्में एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाती हैं जहां उत्पादन में वृद्धि, उत्पादन के साधनों में वृद्धि की तुलना में कम होती है। इस बिंदु पर आंतरिक अपमितव्ययताएं लागू हो जाती हैं ।

आयताकार परवलय : ऐसा वक्र जिसके किसी भी बिंदु से उसके नीचे बनाए गए आयतों के क्षेत्रफल एकसमान हों।

आपूर्ति में कमी : किसी वस्तु की दी हुई कीमत पर वस्तु की आपूर्ति में कमी आ जाना।

आपूर्ति की लोच : कीमत परिवर्तन के प्रति आपूर्ति की मात्रा की संवेदनशीलता।

आपूर्ति का विस्तार : किसी वस्तु की पूर्ति में वृद्धि के फलस्वरूप वस्तु की आपूर्ति में वृद्धि।

आवंटनात्मक दक्षता (Allocative efficiency) : उपभोक्ताओं की माँग पर वस्तुओं/सेवाओं का उत्पादन उस कीमत पर करना जो पूर्ति की सीमांत लागत को दर्शाती है।

आवंटनात्मक दक्षता : आवंटनात्मक दक्षता किसी अर्थव्यवस्था के लिए वह अवस्था है जहाँ उत्पादन उपभोक्ता प्राथमिकताओं को इस प्रकार व्यक्त करता है कि प्रत्येक वस्तु एवं सेवा का उत्पादन उस बिंदु या स्तर तक किया जाता है जहाँ अंतिम इकाई उपभोक्ताओं को जो सीमांत लाभ प्रदान करती है वह उत्पादन की सीमांत लागत के बराबर होता है। एकल कीमत मॉडल में आवंटनात्मक दक्षता के बिंदु पर वस्तु अथवा सेवा की कीमत उसकी सीमांत लागत के बराबर होती है।

आभासी लगान : किसी साधन की औसत लागत से ऊपर उत्पत्ति के किसी साधन को प्राप्त होने वाली आय। यह एक अल्पकालीन अवधारणा है।

उत्पाद विभेद : सामान्य तौर पर एक-दूसरे से मिलती-जुलती लेकिन किसी न किसी आधार पर भिन्नता रखने वाली वस्तुओं की बिक्री। उपभोक्ताओं को इन्हीं में से अपनी पसंद तय करनी होती है।

उत्पादक दक्षता : उत्पादक दक्षता एक ऐसा आर्थिक स्तर है जहाँ अर्थव्यवस्था में किसी अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी लाए बिना किसी वस्तु के उत्पादन में वृद्धि नहीं की जा सकती। यह स्थिति उसी अवस्था में उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था उत्पादन संभावना सीमा पर होती है।

उत्पादन संभावना वक्र : किसी अर्थव्यवस्था में दो वस्तुओं/सेवाओं के उन संयोजनों को व्यक्त करने वाला वक्र जिन्हें समाज अपने संसाधनों के दक्षतापूर्ण प्रयोग करते हुए उत्पादित कर सकता है।

उत्पादन फलन : वह तकनीकी नियम जो, साधन आगतों तथ निर्गत के बीच संबंध को व्यक्त करता है, उत्पादन फलन कहलाता है।

उपभोक्ता संतुलन : वह बिंदु जिस पर एक उपभोक्ता दी गई आय तथा कीमतों के प्रतिबंधों के अंतर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं की खरीद से अनुकूलतम उपयोगिता या संतुष्टि पर पहुँचता है।

उपभोग : किसी आवश्यकता की संतुष्टि की प्रक्रिया में वस्तुओं में अंतर्निहित उपयोगिता का प्रयोग।

उपयोगिता : वस्तुओं की आवश्यकताएँ पूर्ण कर पाने की क्षमता। यह उपभोक्ता को किसी चीज़ से मिली संतुष्टि या सेवा ही है।

एकाधिकार : वस्तु के कोई निकट स्थानापन्न नहीं होने की दशा में किसी वस्तु का एकमात्र उत्पादक (विक्रेता) होना।

एकाधिकारिक प्रतियोगिता : अनेक फर्में एक-दूसरे से मिलता-जुलता लेकिन विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन करती हैं जो एक-दूसरे के निकट स्थानापन्न होते हैं। दूसरे शब्दों में, अधिक संख्या में विक्रेता फर्म लगभग एक जैसी (लेकिन एकसमान नहीं), वस्तुएँ बेचती हैं तथा कीमत और अन्य कारकों में एक-दूसरे से प्रतियोगिता करती हैं।

सीमांत आगम उत्पाद (एम.आर.पी.) : सीमांत आगम उत्पाद अर्थात् सीमांत आगम एवं साधन के सीमांत उत्पाद का गुणनफल।

एकाधिकारी : किसी वस्तु की संपूर्ण आपूर्ति पर नियंत्रण रखने वाला उत्पादक।

ऐतिहासिक लागत : ऐतिहासिक लागत वह लागत है जो संपत्ति को क्रय करते समय वास्तव में व्यय हो चुकी है।

औसत उत्पाद : जब कुल उत्पाद को प्रयोग की गई आगत की इकाइयों की संख्या से भाग किया जाता है वह औसत उत्पाद है।

कटक (रिज) रेखाएं : उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करने वाली रेखाओं को कटक (रिज) रेखाओं के रूप में जाना जाता है।

कीमत विभेद (Price discrimination) : जब कोई फर्म लागत से कोई संबंध न होते हुए भी उत्पादित वस्तु अथवा सेवा की अलग-अलग क्रेताओं से अलग-अलग कीमत वसूलती है तो उसे कीमत विभेद की संज्ञा दी जाती है।

कैदी की दुविधा : द्यूत सिद्धांत में एक ऐसी स्थिति जिसमें दो खिलाड़ियों के पास केवल दो ही विकल्प होते हैं जिनका परिणाम एक

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

दूसरे द्वारा एक साथ लिए गए निर्णयों पर निर्भर करता है। इसे प्रायः दो कैदियों द्वारा अपराध को स्वीकार कर लेने या न करने के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कूर्नो प्रतिमान : अल्पाधिकार का कूर्नो प्रतिमान इस मान्यता पर आधारित है कि दो प्रतिस्पर्धी फर्में एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं तथा यह निर्धारित कर कि कितना उत्पादन करना है अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करती हैं। सभी फर्में अपने द्वारा किए जाने वाले उत्पादन की मात्रा का निर्धारण एक साथ करती हैं।

कीमत अनुपात या सापेक्षिक कीमत : किसी वस्तु की कीमत जो किसी अन्य वस्तु की कीमत के सापेक्ष व्यक्त की जाती है। सापेक्षिक कीमत को प्रायः दो कीमतों के अनुपात के रूप में व्यक्त किया जाता है।

कीमत सीमा : सरकार द्वारा किसी वस्तु या सेवा की अधिकतम सीमा निर्धारित कर देना।

कीमत प्रभाव : बाज़ार में उत्पाद या सेवा के लिए उपभोक्ता की मांग पर इसकी कीमत में परिवर्तन का प्रभाव पड़ता है। किसी वस्तु की कीमत पर किसी घटना के प्रभाव को भी कीमत प्रभाव कह सकते हैं। कीमत प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव तथा आय प्रभाव का एक परिणामी प्रभाव है।

कुल उपयोगिता : किसी वस्तु की सभी उपभोग की गई इकाइयों से मिली उपयोगिता का योगफल।

गणनावाचक उपयोगिता : गणनावाचक उपयोगिता दृष्टिकोण नव-प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने प्रतिपादित किया था, जिन्हें विश्वास था कि उपयोगिता मापनीय है तथा ग्राहक गणनात्मक या मात्रात्मक अंक जैसे 1, 2, 3 इत्यादि में अपनी संतुष्टि को व्यक्त कर सकता है।

गै़र-सहयोगात्मक व्यवहार: अल्पाधिकार को सर्वोत्तम रूप में बाज़ार के भीतर उसके वास्तविक व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है। सकेंद्रीकरण अनुपात उस स्तर या सीमा का माप करता है जहाँ तक बाज़ार की कुछ फर्मों के बीच कोई एक फर्म प्रभुत्व रखती है। यह फर्में जब आपस में मिलकर कार्य करने के लिए समझौता कर लेती हैं तो उसे अल्पाधिकारी बाज़ार में सहयोगात्मक व्यवहार के रूप में जाना जाता है।

गैर-अपवर्जनीयता : भुगतान न करने वाले किसी भी उपभोक्ता को उपयोग करने से वंचित न किए जाने की स्थिति।

गैर-प्रतिद्वंद्वी : जब किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु का उपभोग किए जाने से किसी अन्य के हिस्से में कोई कमी नहीं होती।

गुणवाची अर्थशास्त्र : क्या वांछनीय है और वर्तमान दशाओं में कैसे परिवर्तनों द्वारा उसे पाया जा सकता है? इस प्रकार के प्रश्नों का अध्ययन करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

गिफ्फन वस्तु : ऐसी वस्तुएं जिनकी कीमत और मांग की मात्रा के बीच सीधा संबंध होता है।

घटते प्रतिफल के नियम : जब एक आगत की अधिक इकाइयों का अन्य आगत की स्थिर मात्रा के साथ प्रयोग किया जाता है, परिवर्ती आगत का सीमांत उत्पाद एक बिंदु के पश्चात् घटता है।

डूबत लागत : डूबत लागत वह लागत है जो व्यय की जा चुकी है तथा जिसे वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता।

तकनीकी प्रतिस्थापन की सीमांत दर : प्रतिस्थापन की दर या प्रतिस्थापन की सीमांत दर वह दर है जहाँ किसी अन्य वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन (सीमांत इकाई) करने के लिए किसी वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करना पड़ता है। यह मानकर चला जाता है कि दोनों ही वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए एक जैसे दुर्लभ आगतों का प्रयोग किया जाता है। रूपांतरण की सीमांत दर उत्पादन संभावना सीमा (PPF) से संबद्ध है जो समान संसाधनों को प्रयुक्त करते हुए दो वस्तुओं के संभाव्य उत्पादन को व्यक्त करता है।

तुलनात्मक लाभ : किसी देश A को वस्तु x के उत्पादन में तुलनात्मक लाभ प्राप्त है यदि घरेलू स्तर पर उसकी लागत किसी अन्य देश में उसी वस्तु की लागत की तुलना में कम है।

दीर्घकाल : वह अवधि जिसमें प्लांट की क्षमता सहित सभी आगतें परिवर्तनशील हैं।

न्यूनतम मज़दूरी अधिनियम : सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार के रोज़गारों के लिए निर्धारित न्यूनतम मज़दूरी से संबंधित कानून।

निःशुल्क सवारी : किसी व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु या सेवा का मूल्य चुकाए बिना उसका उपयोग करना।

नैतिक द्वंद्व : किसी दूसरे पक्ष से जानबूझ कर कुछ सूचना का छुपाया जाना।

नति परिवर्तन बिंदु (Inflexion point) : वह बिंदु जहां कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ना बंद करता है तथा घटती दर से बढ़ना आरंभ करता है नति परिवर्तन बिंदु कहलाता है।

निर्भर चर : ऐसा चर जिसका मान किसी स्वतंत्र चर में परिवर्तन के साथ ही बदलता हो।

निकृष्ट पदार्थ : ऐसी वस्तुएँ जिनकी मांग की मात्रा और उपभोक्ता की आय में विलोम संबंध होता है।

निजी पदार्थ : ऐसे पदार्थ जिनका उपभोग चुने हुए प्रयोक्ताओं तक सीमित रखा जा सके। इस तरह से इनका स्वरूप विभाजनीय हो जाता है।

पूर्ण प्रतियोगी बाज़ार : एक बाज़ार पूर्ण प्रतियोगिता वाला बाज़ार है यदि इससे अनेक उपभोक्ता एवं अनेक फर्में हैं, किसी के पास भी बाज़ार का कोई बड़ा हिस्सा नहीं है, सभी फर्में एक जैसी वस्तु का उत्पादन करती हैं, बाज़ार में प्रवेश करने तथा बाज़ार से बाहर निकलने में कोई बाधा नहीं है तथा उत्पादकों एवं उपभोक्ताओं को बाज़ार की पूरी जानकारी है।

पॉल स्वीज़ी का कोनेदार मांग वक्र : कोनेदार माँग वक्र का सिद्धांत अल्पाधिकार एवं एकाधिकारिक प्रतियोगिता का एक आर्थिक सिद्धांत है।

प्रतिकूल चयन : जब असमान सूचना के चलते किसी सौदे का एक पक्ष को अर्द्ध अनुकूलतम चयन करना पड़ता है।

पदार्थ : ऐसी चीज़ें जिनमें उपयोगिता हो अथवा जिसका अन्य वस्तुओं/सेवाओं के उत्पादन में प्रयोग हो सके।

पैमाने के स्थिर प्रतिफल : पैमाने के स्थिर प्रतिफल से तात्पर्य है कि जब सभी आगतों को एक निश्चित अनुपात में बढ़ाया जाता है, तब उत्पादन भी समान अनुपात में बढ़ता है ।

पैमाने के घटते प्रतिफल : पैमाने के घटते प्रतिफल का संदर्भ उस स्थिति से है जब उत्पाद आगतों की तुलना में कम अनुपात में बढ़ता है।

पैमाने के बढ़ते प्रतिफल : पैमाने के बढ़ते प्रतिफल से अभिप्राय उस स्थिति से है जब उत्पाद आगतों की तुलना में अधिक अनुपात में बढ़ता है।

प्रतिस्थापक वस्तु : वह वस्तु जिसकी मांग का किसी वस्तु की मांग के साथ विलोम संबंध हो।

पूर्ति का संकुचन : कीमत में कमी के कारण आपूर्ति की मात्रा में आयी कमी।

प्रतिस्थापन प्रभाव : कीमत में वृद्धि के कारण मांग में आया वह प्रभाव जो एक उपभोक्ता को एक सापेक्षिक रूप से कम कीमत वाली वस्तु की उच्च कीमत वाली से अधिक खरीदने के लिए प्रेरित करता है।

प्रतिस्थापन लागत : प्रतिस्थापन लागत वह लागत है जो संपत्ति का पुनर्स्थापन करने पर व्यय होगा (प्रतिस्थापन लागत समान प्रकार की नई संपत्ति की वर्तमान लागत होती है)।

प्रतिस्थापन प्रभाव : अन्य कीमतें स्थिर रहने पर एक वस्तु की कीमत के वह प्रभाव जो अन्य वस्तुओं के स्थान पर इस वस्तु की मांग में आए परिवर्तन को दिखाते हैं।

प्रयोग मूल्य : वस्तुओं की उपयोगिता।

प्रवाह चर : ऐसा चर जिसे किसी अवधि के अनुसार ही अभिव्यक्त किया जाता है।

ब्याज : पूँजी के उपयोग हेतु भुगतान की जाने वाली धनराशि ब्याज ही ब्याज वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में प्रयुक्त की जाने वाली मानव निर्मित वस्तुओं (मशीनों) के लिए भुगतान किया जाता है।

बाह्यताएँ : किसी अर्थव्यवस्था में बाह्यताएँ उस समय उत्पन्न होती हैं जब उत्पादन या उपभोग किसी ऐसे तीसरे पक्ष को प्रभावित करता है जिसका ऐसे उत्पादन या उपभोग से कोई संबंध नहीं होता।

बाह्य मितव्ययताएं : जब एक फर्म उत्पादन आरंभ करती है, उसे अनेक ऐसी मितव्ययताएं प्राप्त होती हैं जिसके लिए उसकी स्वयं की रणनीति या योजनाएं जिम्मेदार नहीं होतीं। ये सभी फर्मों की बाह्य मितव्ययताएं कहलाती हैं ।

बाह्य अपमितव्ययताएं : जब उत्पादन के पैमाने में विस्तार किया जाता है, तब अनेक ऐसी अपमितव्ययताएं भी उत्पन्न होती हैं जिनका स्वयं फर्म पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता किंतु इनका भार अन्य फर्मों को सहन करना पड़ता है। इन्हें बाह्य अमितव्ययताओं के तौर पर जाना जाता है ।

बजट रेखा : बजट रेखा, जिसे बजट प्रतिबंध भी कहा जाता है दो वस्तुओं के उन सभी संयोजनों को दर्शाता है जिन्हें एक उपभोक्ता बाज़ार कीमतों के दिए हुए होने पर तथा विशिष्ट आय स्तर के अंतर्गत खरीद सकता है।

बाज़ार अपूर्णताएँ : बाज़ार की ऐसी दशाएं जो पूर्ण प्रतियोगिता के अनुरूप नहीं हैं।

बाज़ार विफलताएँ : अर्थव्यवस्था में संसाधनों के दक्ष आवंटन को प्राप्त करने में लिए बाज़ार तंत्र की विफलता।

मज़दूरी : तकनीकी विशेषज्ञता और शारीरिक श्रम के द्वारा वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन हेतु किए गए मानव प्रयास के रूप में श्रमिक को भुगतान किए जाने वाले पारितोषक को मज़दूरी कहते हैं।

माँग : नियत इकाई कीमत पर किसी वस्तु/सेवा की जितनी इकाइयाँ हमारा उपभोक्ता प्रति समयावधि खरीदने को तत्पर हो।

मांग की आय लोच : उपभोक्ता की आय में आनुपातिक परिवर्तन के प्रति उपभोक्ता की मांग की संवेदनशीलता।

माँग में परिवर्तन : पूरे माँग वक्र का विवर्तन या खिसकाव।

माँग की मात्रा में परिवर्तन : वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण मांग वक्र के एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक चलना।

मौद्रिक विनिमय : मुद्रा के बदले किसी वस्तु/सेवा की बिक्री।

यथार्थवादी या सकारात्मक अर्थशास्त्र : किसी यथास्थिति की वांछनीयता पर टिप्पणी किए बिना और उसमें परिवर्तन के सुझाव दिए बिना उसका निरूपण करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।

लगान : भूमि के उपयोग हेतु किए जाने वाले भुगतान को लगान कहते हैं। उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त किए जाने वाले समस्त प्राकृतिक संसाधन भूमि के अंतर्गत आते हैं।

लाभ : उत्पादन प्रक्रिया में अपने संगठन एवं कौशल के उपयोग तथा जोखिम वहन करने के लिए उद्यमी को प्राप्त होने वाला पारितोषक लाभ है।

लेखांकन लागत : लेखांकन लागत से अभिप्राय फर्म के वास्तविक व्यय तथा पूँजीगत उपकरणों के मूल्यह्रास व्यय से है।

व्यापार संगुट : प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित रखकर कीमतों को ऊँचा रखने के उद्देश्य से विनिर्माताओं या आपूर्तिकर्ताओं का संघ।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

व्युत्पन्न माँग	:	उत्पत्ति के साधनों की माँग इसलिए की जाती है क्योंकि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की माँग की जाती है। इसलिए साधनों की माँग व्युत्पन्न माँग है।
वी.एम.पी.	:	सीमांत उत्पाद का मूल्य अर्थात् कीमत एवं साधन के सीमांत उत्पाद का गुणनफल।
वाणिज्यवाद	:	व्यापार का यह सिद्धांत बताता है कि देश को निर्यातों को बढ़ावा देना चाहिए तथा आयातों को हतोत्साहित करना चाहिए। वाणिज्यवादियों का तर्क था कि राष्ट्र अपने निर्यातों में वृद्धि करके तथा आयातों में कमी लाकर ही बहुमूल्य धातुओं (सोना) के रूप में अधिकाधिक संपत्ति संचित कर सकता है।
विकुंचित वक्र (Non-linear Curve)	:	वह आपूर्ति वक्र जो एक सीधी रेखा न हो।
विशेष गुण पदार्थ (Merit Goods)	:	ऐसी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनका उपभोग उनके उपभोक्ता ही नहीं पूरे समाज को भी लाभान्वित करता है।
विलासिताएँ	:	ऐसी वस्तुएं जो सामाजिक मान-प्रतिष्ठा के लिए ही प्रयोग की जाती हैं।
वस्तु विनियम	:	वस्तुओं/सेवाओं के बदले वस्तुएँ/सेवाओं का ही क्रय-विक्रय या विनिमय।
विनियम मूल्य	:	किसी वस्तु की बाज़ार में प्रचलित कीमत।
व्यष्टि अर्थशास्त्र	:	व्यक्ति स्तरीय आर्थिक इकाइयों या उनके समूहों अथवा वस्तु स्तर पर कीमत आदि चरों का अध्ययन करने वाली अर्थशास्त्र की प्रशाखा।
वृद्धिशील लागत	:	उत्पादन में एक वृद्धि होने के परिणामस्वरूप कुल लागत में होने वाली वृद्धि वृद्धिशील लागत होती है।
रेखीय समरूप उत्पादन फलन	:	जब उत्पाद में समान अनुपात में वृद्धि होती है जिसमें आगतों में वृद्धि हुई है, उत्पादन फलन रेखीय समरूप है। उदाहरणार्थ, यदि श्रम तथा पूँजी में λ गुणा की वृद्धि हुई है, परिणामस्वरूप, उत्पाद में भी λ गुणा वृद्धि होती है, तब उत्पादन फलन रेखीय समरूप है।
सामान्य लाभ	:	सामान्य लाभ एक ऐसी आर्थिक दशा है जो उस समय उत्पन्न होती है जबकि फर्म के कुल आगम एवं कुल लागत के बीच का अंतर शून्य होता है। सरल शब्दों में, किसी फर्म को बाज़ार में प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए आवश्यक लाभ ही सामान्य लाभ है।
सहयोगात्मक व्यवहार	:	सहयोगात्मक अल्पाधिकार के अंतर्गत कुछ ही उत्पादक होते हैं जो संसाधनों का आवंटन आपस में करने तथा उत्पादन की कीमत निर्धारित करने के लिए आपस में सहयोग करते हैं। व्यापार संगुट, सहयोगात्मक अल्पाधिकार का एक उदाहरण है।
स्टैकिलबर्ग प्रतिमान	:	स्टैकलबर्ग प्रतिमान अर्थशास्त्र में एक रणनीतिक द्यूत है जिसमें नेतृत्व करने वाली फर्में पहले चाल चलती हैं

अर्थात् निर्णय लेती हैं जिसके क्रम में अन्य फर्में निर्णय लेती हैं। स्टैकलबर्ग संतुलन बनाए रखने में आगे बाधाएं आती हैं।

सीमांत (भौतिक उत्पाद) : उत्पत्ति के अन्य साधनों को स्थिर रखते हुए किसी एक साधन की एक अतिरिक्त इकाई को काम पर लगाने से उत्पादित मात्रा में हुआ परिवर्तन।

सीमांत आगम उत्पाद : सीमांत भौतिक उत्पाद में सीमांत आगम से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल।

संसाधनों का दक्ष आवंटन : आगतों, उत्पादन और उत्पादन का ऐसा वितरण जो अर्थव्यवस्था में किसी परिवर्तन से किसी भी व्यक्ति को खराब स्थिति में पहुँचाएं बिना किसी अन्य व्यक्ति को बेहतर स्थिति में न पहुँचा पाए (समभाव वक्र चित्र द्वारा मापित)।

समभाव वक्र या उपयोगिता सीमा : एक समभाव वक्र दो आर्थिक वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को इंगित करता है जिन पर उपभोक्ता का व्यवहार समभावपूर्ण रहता है, भले ही वह कोई भी संयोग चुन ले।

समोत्पाद वक्र : समोत्पाद वक्र एक ऐसा ग्राफ है जिस पर स्थित प्रत्येक बिंदु पर सभी आगतों के संयोग वस्तु की एकसमान मात्रा उत्पादित करते हैं।

सीमांत प्रतिस्थापन दर : प्रतिस्थापन की सीमांत दर ऐसी दर है जिस पर कोई उपभोक्ता किसी एक वस्तु की मात्रा को किसी दूसरी वस्तु की मात्रा से प्रतिस्थापित करने के लिए तैयार है, उस सीमा तक जब तक कि ऐसा करने से उसकी संतुष्टि का स्तर एक समान रहे। इसे समभाव वक्र सिद्धांत में उपभोक्ता के व्यवहार का विश्लेषण करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

सार्वजनिक वस्तुएँ : ऐसी वस्तुएँ एवं सेवाएँ जिनके उपयोग से किसी भी व्यक्ति को वंचित नहीं किया जा सकता एवं किसी एक व्यक्ति द्वारा ऐसी वस्तुओं/सेवाओं का उपयोग किए जाने से इन्हीं वस्तुओं/सेवाओं के उपयोग में किसी अन्य व्यक्ति के लिए कोई कमी नहीं आती।

सार्वजनिक हस्तक्षेप : वस्तुओं, सेवाओं एवं अन्य कारकों के लिए बाज़ार में सरकार द्वारा किए जाने वाले कार्य।

सार्वजनिक प्रावधान : सरकारी अधिकारियों/निकायों द्वारा सामाजिक दृष्टि से वांछित एवं महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ एवं सेवाएँ अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुँचाना।

सामूहिक संसाधन : जहाँ किसी संसाधन का कोई स्वामी नहीं होता लेकिन जिनके प्रयुक्तकर्ता अनेक होते हैं।

साधन संपन्नता : किसी देश के पास भूमि, श्रम और पूँजी आदि जैसे साधनों की उपलब्धता।

सार्वजनिक पदार्थ : ऐसी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनकी सुलभता को कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इनके

हितलाभ अविभाज्य होते हैं– किसी व्यक्ति को उनसे लाभान्वित होने से वंचित या बहिष्कृत नहीं रखा जा सकता।

सुविधाएँ : ऐसे पदार्थ की चर्चा हमारी उत्पादन क्षमता और सुख-सुविधा से वर्धित करने में सहायक हों।

समष्टि अर्थशास्त्र : अर्थशास्त्र की वह प्रशाखा जिसमें समूचे अर्थतंत्र या उसके एक बहुत बड़े प्रखंड का अध्ययन होता है।

सीमांत इकाई : विचारगत चर की अंतिम इकाई का मान।

सीमांत उपयोगिता : यह उपभोक्ता द्वारा एक इकाई अधिक उपभोग करने पर उसे प्राप्त उपयोगिता है। यह एक महत्त्वपूर्ण संकल्पना है, अर्थशास्त्री इसी को प्रयोग कर यह आकलन करते हैं कि कोई उपभोक्ता किसी वस्तु की कितनी इकाइयाँ खरीदने को तैयार होगा।

स्टॉक (या भंडार) चर : ऐसा चर जिसका परिमाण किसी समय बिंदु पर ही मापा जाता है।

संपूरक पदार्थ : ऐसी वस्तु जिसकी मांग का किसी वस्तु के उपभोग के साथ सीधा संबंध हो।

समलागत रेखा : एक समलागत रेखा, आगतों के विभिन्न संयोगों को दर्शाती है जो एक दी गई व्यय राशि से क्रय की जा सकती है।

सम-उत्पाद वक्र : एक सम-उत्पाद वक्र उत्पादन के दो साधनों के सभी संयोगों का ज्यामातीय प्रस्तुतीकरण है जो उत्पाद का समान स्तर प्राप्त करता है।

सीमांत तकनीकी प्रतिस्थान दर ($MRTS_{L,K}$) : साधन श्रम (L) के लिए साधन पूँजी (K) की सीमांत तकनीकी प्रतिस्थापन की दर पूँजी (K) की वह मात्रा में कमी है, जो कि श्रम (L) की मात्रा में एक इकाई की वृद्धि करने पर उत्पाद स्तर को अपरिवर्तित रखने के लिए की जाती है।

स्पष्ट लागत : स्पष्ट लागतें एक फर्म तथा अन्य पक्षों के बीच होने वाले लेन-देन के कारण उत्पन्न होती हैं जिसमें फर्म उत्पादन करने के लिए आदतों या सेवाओं का क्रय करती है।

श्रम संघ : अपने अधिकारों के संरक्षण हेतु श्रमिकों का एक मान्यता प्राप्त संगठन।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) Kautsoyiannis, A. (1979), *Modern Micro Economics*, London: Macmillan.

2) Lipsey, RG (1979), *An Introduction to Positive Economics*, English Language Book Society.

3) Pindyck, Robert S. and Daniel Rubinfield, and Prem L. Mehta (2006), *Micro Economics*, An imprint of Pearson Education.

4) Case, Karl E. and Ray C. Fair (2015), *Principles of Economics*, Pearson Education, New Delhi.

5) Stiglitz, J.E. and Carl E. Walsh (2014), *Economics*, viva Books, New Delhi.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY